SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 06
NOVEMBER-2023, Price Rs.20/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

# सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

नवंबर-2023

रु.20/-

14-11-2023
गजवाहन

तिरुचानूर
श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव
2023 नवंबर 10 से 18 तक

19-11-2023 को
तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग महोत्सव

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्॥

*(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २.८)*

भूमि में निष्कण्टक, धन-धान्य सम्पन्न राज्य को और देवताओं के स्वामीपन को प्राप्त हेकर भी मैं उस उपाय को नहीं देखता हूँ, जो मेरी इन्द्रियों के सुखानेवाले शोक दूर कर सकें।

नदुलोह्लवु ना स्नानमु कडु
सदरमु नाकी स्नानमु ॥नदु॥

इरुवंकल नी येचिन मुद्रलु
धरियिंचुटे ना स्नानमु
धरपै नी निजदासुल दासुल
चरणधूलि ना स्नानमु ॥नदु॥

तलपुलोन निनु दलचिन वारल
दलचुटे ना स्नानमु
वलनुग निनुगनुवारल श्रीपाद
जलमुले ना स्नानमु ॥नदु॥

परमभागवत पादांबुजमुल
रुशानमे ना स्नानमु
तिरुवेंकटगिरि देव नी कथा
स्मरणमे ना स्नानमु ॥नदु॥

स्वच्छ स्नान के लक्षण वर्णित हैं - मात्र नदी में डुबकियाँ लेना - स्नान नहीं है। तुम्हारी मुद्राओं को दोनों भुजाओं पर धरना ही स्नान है। तुम्हारे निज दासों की पावन चरण-धूलि का स्पर्श ही स्नान है। सदा तुम्हारे ही ध्यान में रहनेवालों का स्मरण करना ही स्नान है। अपनी भक्ति के माध्यम से ही, तुम्हें देख पाने वालों के चरण जल को पाना ही मेरा स्नान है। हे मेरे स्वामी! परम भागवतों के चरण कमलों का दर्शन तथा तुम्हारी दिव्य गाथाओं का नित्य स्मरण ही स्नान मानता हूँ।

- अन्नमाचार्य

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

## तिरुचानूर

# श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

### 2023 नवम्बर 10 से 18 तक

**10-11-2023 शुक्रवार**
दिन - ध्वजारोहण
रात - लघुशेषवाहन

**11-11-2023 शनिवार**
दिन - महाशेषवाहन
रात - हंसवाहन

**12-11-2023 रविवार**
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - सिंहवाहन

**13-11-2023 सोमवार**
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - हनुमंतवाहन

**14-11-2023 मंगलवार**
दिन - पालकी उत्सव,
सा - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

**15-11-2023 बुधवार**
दिन - सर्वभूपालवाहन
सा - स्वर्ण रथोत्सव
रात - गरुडवाहन

**16-11-2023 गुरुवार**
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

**17-11-2023 शुक्रवार**
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

**18-11-2023 शनिवार**
दिन - चक्रस्नान, पंचमीतीर्थ
रात - तिरुच्चि उत्सव,
ध्वजावरोहण

# सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५४ नवंबर-२०२३ अंक-०६

## विषयसूची

| | | |
|---|---|---|
| तिरुचानूर भगवती श्री पद्मावती देवी के ब्रह्मोत्सव | डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्य | 07 |
| श्री वेंकटाचल की महिमा | आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी | 14 |
| युग-युगों का प्रकाश - दीपावली | श्री वेमुनूरि राजमौलि | 18 |
| तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी) | प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव<br>प्रो.गोपाल शर्मा | 22 |
| केदार गौरी व्रत | डॉ.जी.मोहन नायुडु | 24 |
| हरि-हर का प्रिय पवित्र मास कार्तिक | प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी | 31 |
| नागचतुर्थी की विशिष्टता | डॉ.के.सुधाकर राव | 35 |
| क्षीराब्धि द्वादशी का प्राशस्त्य | श्रीमती वी.केदारम्मा | 38 |
| श्री पशुपतिनाथ मंदिर, नेपाल | श्री डी.राजकुमार | 41 |
| केले के स्वास्थ्य लाभ | डॉ.सुमा जोषि | 44 |
| आइये, संस्कृत सीखेंगे...!! | श्री अवधेष कुमार शर्मा | 46 |
| नवम्बर महीने का राशिफल | डॉ.केशव मिश्र | 47 |
| नीतिकथा - पूर्व कर्म का फल | श्री के.रामनाथन | 48 |
| चित्रकथा - पद्मव्यूह | डॉ.एम.रजनी | 50 |
| क्विज - 16 | | 52 |

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - गजवाहन पर श्री पद्मावतीदेवी, तिरुचानूर।
चौथा कवर पृष्ठ - पंचमीतीर्थ, तिरुचानूर।

*गौरव संपादक*
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

*प्रधान संपादक*
डॉ.के.राधारमण

*संपादक*
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

*उपसंपादक*
श्रीमती एन.मनोरमा

*मुद्रक*
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

*स्थिरचित्र*
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

**सूचना**
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
*- प्रधान संपादक*

# माता पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

सकल लोकपावनी, जगज्जननी, सर्वेश्वरी, भक्तवरदायिनी भगवान श्रीनिवास की हृदयेश्वरी माता श्री अलर् मेल् मंगतायार जी तिरुपति के समीप तिरुचानूर में श्री पद्मावती देवी के नाम से विराजित है। देवी माँ को प्रति दिन मंदिर में नित्योत्सव, वारोत्सव, पक्षोत्सव, वार्षिकोत्सव आदि पूजा अनुष्ठानों को पांचरात्र आगम के अनुसार करते हैं।

तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी के मंदिर में ब्रह्मोत्सवों के साथ-साथ पुष्पयाग, श्री वरलक्ष्मीव्रत, कुंकुमार्चना, पवित्रोत्सव, ज्येष्ठाभिषेक, प्लवोत्सव जैसे आदि अनेक महोत्सवों को भी आयोजित किया जाता है। इन महोत्सवों में अशेष भक्तगण भाग लेकर पूनीत होते है।

पुराणोक्ति है कि भगवान बालाजी का दर्शन तभी संपन्न होगी जब वे माता पद्मावती के दर्शन करेंगे। अलमेलुमंगतायार साक्षात् भगवान श्रीनिवास के वक्षःस्थल में व्यूहलक्ष्मी के रूप में विराजित हुई है। भक्तों की मनौतियाँ पहले माँ सुनती है, फिर भगवान श्री वेंकटेश्वर को सुनाती है और वर प्रदान करवाने की जिम्मेदारी स्वीकार करती है। अर्चावतार के रूप में तिरुचानूर में विराजित देवी माँ ब्रह्मांडनायकी हैं।

ब्रह्मोत्सवों के समय देवी माँ विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर पुरवीथियों में भक्तों को दर्शन देकर अनुग्रह प्रदान करती हैं। मुख्य रूप से इस ब्रह्मोत्सवों के अंतिम दिन सुबह संपन्न होनेवाली 'पंचमीतीर्थ'' का विशिष्ट स्थान है। इस अवसर पर तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर से माता पद्मावती को मंगलद्रव्य भेंट के रूप में भेजा जाता है। कार्तिक मास के शुद्‌ध पंचमी, शुक्रवार, अभिजित लग्न में श्री महालक्ष्मी पद्मसरोवर में सहस्त्रदल स्वर्ण पद्म में अवतरित हुई। इस संदर्भ में संपन्न होनेवाली चक्रस्नान महोत्सव में भक्तगण भाग लेकर पवित्र पुण्य स्नान करके पुनीत होते है। अतः चंद्रसहोदरी, समुद्रतनया, ब्रह्मांडनायकी पद्मावती देवी के ब्रह्मोत्सवों में सभी भक्तगण भाग लेकर माँ के करुणा कटाक्ष को प्राप्त करें।

**सर्वेजनाः सुखिनो भवंतु।**

# तिरुचानूर भगवती श्री पद्मावती देवी के ब्रह्मोत्सव

- डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्य

*''मातः समस्त जगतां मधुकैटभारेः*
*वक्षो विहारिणि मनोहर दिव्यमूर्ते।*
*श्री स्वामिनि श्रितजन प्रियदानशीले*
*श्रीवेंकटेशदयिते तव सुप्रभातम्।।''*

''जय हो माता पद्मावती! जय जय परम पावनी भगवती!'' इतिहास के पन्ने पलटने से यह पता चलता है कि ई.826 में तिरुचानूर में भगवान बालाजी श्री वेंकटेश्वरजी केलिए बाणवंशीय विजयदन्ती विक्रम वर्मा ने इलन कोइल या तिरुइलन कोइल (पहाड़ पर स्थित भगवान का मंदिर) बनाया था जो पल्लव-युग में निर्मित हुआ। परन्तु यह मंदिर सन् 1000 ई. में तिरोहित हुआ। उसी समय ई.840-870 के बीच, शायद, सन् 870 ई. में तिरुमल में भगवान बालाजी वेंकटेश्वर केलिए जो तिरुवेंगडत्तु पेरूमानडिगल या तिरुवेंगडम् उडैय्यन नाम से पुकारे जाते थे - तिरुमल में निर्मित मंदिर साकार हुआ।

माता पद्मावती का दिव्य मंदिर आंध्रप्रदेश के तिरुपति जिले में तिरुपति से लगभग 5 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पुराणों के अनुसार एक बार भगवान बालाजी के ससुर एवं पद्मावतीजी के पिताजी के पुत्र एवं उनके अनुज तोंडमान के बीच घमासान युद्ध हुआ। उस समय बालाजी वेंकटेशजी तोंडमान के पक्ष में रहकर युद्ध किया था एवं राज्य को दो भाग करके दोनों को दिया एवं समस्या का समाधान किया। उस कथा में ऐसा है कि तोंडमान ने नारायणवन को अपनी राजधानी बनाकर तथा आकाशराज के पुत्र ने कालहस्ती के निकटवाले तोंडमनाडु प्रांत को राजधानी बनाकर शासन किया था। सन् 1-3 ई. सदियों के बीच के समय में लिखित तमिल संगम साहित्य में या

तदनंतर वाले साहित्यों व शिलालेखों में कहीं भी पद्मावती देवी का उल्लेख नहीं है। पद्मावतीजी के बारे में 15वीं सदी के पश्चात् आये साहित्य में उल्लिखित है।

तिरुचानूर मंदिर के प्रांगण में श्री सूर्यनारायण (भगवान सूर्य) मंदिर, श्री कृष्णस्वामी मंदिर एवं श्री सुंदरराज स्वामी मंदिर इत्यादि हैं।

यह माना जाता है कि भगवती लक्ष्मी आकाशराज की पुत्रिका के रूप में उत्पन्न हुई। उस समय उनका नाम था अलिमेलु। आकाशराज उस प्रांत का शासक था अलिमेलु या अलर्मेल्मंगा (पुष्प पर आसीन माता) ही पद्मावती है जिनका परिणय बालाजी वेंकटेश्वर भगवान से हुआ।

भक्तों का विश्वास है कि माता लक्ष्मी जो वैकुंठ छोड़कर धरती पर आयी, उसने श्रीनिवासजी (श्रीमन्नारायण) को पवित्र पद्मसरोवर में एक स्वर्ण कमल पुष्प में विराजमान होकर दर्शन दिया। वेंकटाचल माहात्म्यम् में यह उल्लिखित है कि स्वर्ण कमल के पूर्ण रूप से विकसित होने के पीछे भगवान सूर्य का योगदान था।

श्रीकृष्णस्वामी का मंदिर 1221 ई. में निर्मित हुआ तो श्री सुंदरराजस्वामी का मंदिर 16वीं सदी में निर्मित हुआ।

## उत्सव एवं वाहन सेवाएँ :

उत्+सवः = उत्सवः - सवः संसार दुःख जलधिः तदुत्तरण साधनं उत्सवः इति प्रति पादितः - जो लौकिक दुःख दूर करके जीवन्मुक्ति मार्ग का बोध कराता है, वही 'उत्सव' है। यह एक प्रकार का महान यज्ञ ही है।

माता पद्मावती देवी के कल्याणोत्सव मंदिर में संपन्न करते है। वैष्णव मंदिरों में ''पंगुनि उत्तरम्'' उत्सव के नाम से विख्यात है।

ब्रह्मोत्सव अपने आप में विशिष्ट हैं। महानुभावों का कहना है कि मंदिर एवं देवताओं के तेज में वृद्धि हेतु देश में ब्रह्मराक्षस इत्यादि दुष्टशक्तियों की निवृत्ति तथा सुख-समृद्धियों केलिए इसे आयोजित करना है।

इस ब्रह्मोत्सव में अनेक वाहनों पर भगवान या भगवती को विराजित कर शोभायात्रा निकालते हैं।

पांचरात्रागम के अनुसार पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव आयोजित किया जाता है। भगवत्-प्रार्थना, अंकुरारोपण, ध्वजारोहण इत्यादि 21 पवित्र कार्यों से युक्त ब्रह्मोत्सव-प्लवोत्सव (नौका विहार) तथा हविर्निवेदन व क्षमायाचना से इतिश्री होती है।

## वाहन - सेवाएँ

तिरुचानूर में हर वर्ष वृश्चिक मास पंचमी के दिन अवबृथ को संकल्पित करके उस दिन के पूर्व नौवें दिन ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। प्रतिदिन दो-दो वाहनों पर तिरुमल में भगवान या तिरुचानूर में भगवती शोभायात्रा पर निकलते हैं। ये वाहन हैं - लघुशेषवाहन, महाशेषवाहन, हंस, मोतीवितान, सिंह, कल्पवृक्ष, हनुमान, गज, सर्वभूपाल, गरुड, सूर्यप्रभा, चंद्रप्रभा, रथ एवं अश्व। माता पद्मावती इन सभी वाहनों पर विराजमान होकर भक्तों को दर्शन देती हैं। इनमें गज, गरुड एवं रथोत्सव अत्यंत विशिष्ट हैं।

## ध्वजारोहण

माता पद्मावती के ब्रह्मोत्सव ध्वजारोहण से प्रारंभ होते हैं। ध्वजस्तंभ का मंदिर में महत्वपूर्ण स्थान है। (ध्वजो जीवस्सउच्यते।)'' इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सकल देवताओं, परिषद् देवताओं एवं अन्य भक्त-वृंद को आमंत्रित करना है।

## लघुशेषवाहन

लघु अर्थात् छोटा। श्री पद्मावतीदेवी के ब्रह्मोत्सवों में प्रथम वाहन है - लघुशेष यानी छोटा शेषनाग। वैसे, शेषनाग श्रीवैकुंठ में भगवान विष्णु की सेवा में मग्न रहते हैं। भगवान उस पर लेटे रहते हैं। कलियुग में बालाजी जिस पर्वत पर स्थित हैं वह शेषाचल है। भगवान की पटरानी पद्मावती के लिए आयोजित इन ब्रह्मोत्सवों में वही शेषनाग लघु (छोटा) शेष होकर पहले दिन सेवा करने तैयार हुआ है। 'शेष' का संप्रदाय परिभाषा में अर्थ है - 'दास्य', भगवान शेषी है तो हम हैं शेष। भगवान की अनुकंपा हमें माता पद्मावती के द्वारा ही प्राप्त होगी। ऐसी माता पहले दिन लघुशेषवाहन पर बैठकर भक्तों को दर्शन देती है।

## महाशेष वाहन

ब्रह्मोत्सव में माताजी का दूसरा वाहन महाशेष है। शेष (नाग) जी भगवान विष्णु के लिए अत्यंत प्रीतिपात्र हैं। वे कभी दास, कभी मित्र, कभी शैया, कबी सिंहासन, कभी छत्री बनकर, श्रीहरि की सेवा करते हैं। श्रीहरि को समयोचित सेवा करते रहते हैं। इस महाशेषवाहन अवश्य दर्शनीय है जो विशेष ज्ञान-बलों से युक्त दास्य भक्ति को प्रकट करता है।

## हंस वाहन

हंस पर विराजमान माता पद्मावती जी अत्यंत आकर्षक लगती हैं। 'क्षीरनीर विभाग कुशलता' हंस का लक्षण है। साथ-साथ हंस शान्ति, कीर्ति, आनंद, सौंदर्य एवं पवित्रता का प्रतीक है। हंस वाहनी माता अपनी दया दृष्टि से पापियों को क्षमा करके उनमें परिवर्तन लाता है हंस द्वारा हमें यह संदेह मिलता है कि हंस की तरह हमें इस विश्व की हर वस्तु में दृष्टिगत होनेवाली अच्छाई-बुराई में बुराई छोडकर भलाई (अच्छाई) ही लेनी चाहिए।

कहा जाता है कि पद्मावती के पतिमहोदय बालाजी ने इसी हंस के रूप में विधाता को वेदों का उपदेश दिया था।

## मोतीवितान वाहन

मोतीवितान वाहन अत्यंत आकर्षक वाहन है जिस पर माताजी बड़ी प्रसन्नता पूर्वक विराजमान होती है। बिजली के दीपों से प्रकाशित होनेवाले मोती उस समय गगन पर टिमटिमानेवाले तारों की याद दिलाते हैं।

## सिंहवाहन

माताजी सिंहवाहन पर तीसरे दिन ही शोभायात्रा पर निकलती हैं। माताजी को सिंहवाहन पर देखकर दुष्ट एवं पापी भयभीत होते हैं। योग शास्त्र के अनुसार, सिंह गमन शक्ति, पराक्रम एवं गंभीरता का प्रतीक है।

## कल्पवृक्ष वाहन

कल्पवृक्ष का आविर्भाव क्षीरसागर मंथन समय में जगन्माता लक्ष्मीजी के साथ हुआ था। कल्पवृक्ष वाहन पर विराजित होकर जब माता पद्मावती पधारती है, तब उनको देखते ही बनता है। कल्पवृक्ष जिस प्रकार मनोकामनाएँ पूरी करता है, उसी प्रकार कल्पवृक्षासीन माताजी अपने आश्रितों की प्रत्येक सदिच्छा को पूरी करती है।

## हनुमद्वाहन

गरुड़ का महत्व रहने पर भी हनुमान बजरंगबली का अपना महत्व है। हनुमान श्रीराम के तो अनन्य भक्त हैं फिर भी वे बालाजी व पद्मावती को श्रीराम व सीतामैया मानकर अपनी सेवा समर्पित करते

हैं। हनुमान जहाँ भगवान पर आश्रित रहते हैं उसी प्रकार भक्तों की स्वयं उनकी मनोकामनाएँ पूरी करते हैं।

## मोहिनी अवतार

स्वर्णपालिका में आनेवाली माताजी मोहिनी अवतार में रहती हैं। मोहिनी साक्षात विष्णु भगवान ही थे जिसने क्षीर सागर मंथन के समय सत्वगुणवाले देवताओं को अमृत देकर दुष्ट एवं अहंकारी राक्षसों को चकमा दिया। भगवान या भगवती सदा सज्ज्नों की ही सहायता करते हैं।

## गज वाहन

गज याने हाथी का माता के साथ गहरा संबंध है। भगवान बालाजी स्वयं भगवान विष्णु के अवतार ही हैं, यह वाहन ब्रह्मोत्सवों में उस दिव्य प्रसंगों का स्मरण दिलाता है। हम भी मगर मच्छ रूपी विपत्तियों से संसार रूपी सरोवर में घिरे रहते हैं। पीडित भी हो जाते हैं। यदि हमारी प्रार्थना दिल की गहराई से होती है, यदि हुए पूर्ण शरणागति से भगवान की शरण में जाते हैं तब वे हमारी रक्षा अवश्य करते है। यह वाहन हमें शरणागति का दिव्य संदेश देता है।

## सर्वभूपाल वाहन

जब बालाजी भगवान समस्त नरेशों के सम्राट हैं तब उनकी पटरानी पद्मावती जी साम्राज्ञी होगी न! इसलिए समस्त शासक, राजा-महाराजा इस महान उत्सव में बढ़ चढ़कर भाग लेते एवं शोभायात्रा को सफल बनाते हैं। इनके अतिरिक्त आठों दिशाओं के पालक (शासक) भी भक्तिभाव से भाग लेते हैं।

## स्वर्ण रथोत्सव

स्वर्ण रथ वाहन भगवान के लिए अत्यंत प्रिय है जिस पर आरूढ़ होकर वे शोभायात्रा पर निकलते हैं। उस समय स्वर्ण रथ के आगे ब्रह्म शून्य रथ, गज, अश्व एवं वृषभ (बैल) चलते हैं। विशेषतः दास भक्तों के विविध प्रकार के आकर्षक नृत्य देखने को मिलते हैं। वसंतोत्सव के उपरांत स्वर्णरथोत्सव को सुवर्णरथरंग डोलोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

### गरुड वाहन

ब्रह्मोत्सवों में 'गरुड़ वाहन' का बड़ा महत्व है। उस दिन श्रद्धालुओं से तिरुचानूर कचाकच भर जाता है। पैर रखने की भी जगह नहीं मिलती। गरुड़ को 'वेदात्मा' कहा जाता है जो भगवान विष्णु की हर प्रकार की सेवा करते हैं। दास, मित्र, पंखा, आसन, ध्वज इत्यादि बनकर गरुड़ सेवा करते हैं। गरुड पर माताजी का दर्शन करके भक्त स्वयं को धन्य मान लेता है। पुलकित होकर वर माँगना भी भूल जाता है।

### सूर्यप्रभावाहन

माता पद्मावती भगवान सूर्य वाहन पर विराजमान होती हैं। सूर्य तेजोमूर्ति एवं रोग निवारक हैं। सूर्य से ही प्रकृति को चैतन्य प्राप्त होता है। चंद्रमा में कांति सूर्य से ही उत्पन्न होती है। सूर्य की आराधना गायत्री मंत्र से की जाती है जो हमारी बुद्धि को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती है। स्वास्थ्य भगवान सूर्य से ही प्राप्त होता हैं। सूर्यप्रभावाहन पर माताजी का दर्शन करना अत्यंत लाभदायक है।

### चंद्रप्रभावाहन

चंद्रप्रभावाहन पर माताजी का दर्शन अत्यंत लाभकारी है। भगवान के स्वयं को नक्षत्रों में चंद्रमा कहा था। चंद्रमा प्रकृति का पोषक तत्वों को प्रेरित करते है। सूर्यप्रभावाहन के तुरंत बाद इस वाहन सेवा को आयोजित करना अत्यंत समीचीन व समुचित लगता है।

### रथ यात्रा :

रथों में दारु रथ का अपना महत्व है। दारु रथ-लकडी से बनती है। कलियुग-वरद, अघटित घटना समर्थ भगवान बालाजी की पटरानी वात्सल्य का प्रतिरूप एवं नित्यानपायिनी माता पद्मावती की सेवा में इस सृष्टि में हर चेतन, हर जड़ भाग लेना चाहता है। इसे वह अपना अहोभाग्य समझता है। स्वर्ण, रजत, लोहा, रत्न इत्यादि लोह जब जगन्माता की सेवा में धन्य होते हैं। फिर वनस्पति-याने वृक्ष एवं वृक्ष-संबंधी हर भाग भी भगवती की सेवा में भाग लेती है। दारु याने लकड़ी से निर्मित रथ पर विराजमान जगन्माता शोभायात्रा पर निकलती है एवं भक्तों को अवर्णनीय

आनंद प्रदान करती है। दारु रथ माता को धारणकर अत्यंत पुलकित होता है एवं स्वयं धन्य व कृतार्थ मानता है।

## अश्व वाहन

अश्व का पशुओं में अपना विशिष्ट स्थान है। अश्व बहुत ही उपयोगी पशु है। पहले इसे केवल यात्रा व युद्धों में उपयोग किया जाता है। इंद्रियों की तुलना घमंडी घोड़ों से की जाएगी घोडों का नियंत्रण मानो इन्द्रियों का नियंत्रण ही है।

इस वाहन द्वारा यह संदेश हमें मिलता है कि इंद्रियों का नियंत्रण जीवन को कृतार्थ बनाता है।

ब्रह्मोत्सवों में अंतिम दिन की उत्सव के पश्चात् चक्रस्नान आयोजित किया जाता है।

## पंचमीतीर्थ

माता पद्मावती के अवतार का दिन है पंचमी जिस दिन अवभृथ होता है। भगवान बालाजी द्वारा प्रेषित तुलसी, हल्दी, कुंकुम, रेशमी-वस्त्र, पकवान व छत्र-विंजामारा के साथ मंदिर नियमों के अनुसार मंगल ध्वनियों के साथ तिरुचानूर पहुँचते हैं।

तिरुमल से प्राप्त हल्दी-चंदन के साथ पद्म सरोवर के तट पर स्थित स्नपनमंडप में माता का तिरुमंजन (अभिषेक) होता है। अंत में सुदर्शन भगवान का पुष्करिणी में चक्रस्नान होता है। सुदर्शन चक्र के साथ-साथ वहाँ एकत्र हुए श्रद्धालु पद्मसरोवर में पवित्र डुबकियाँ लगाते हैं।

**श्री पद्मावती देव्यै नमः।**

(गतांक से)

# श्री वेंकटाचल की महिमा

## (हिंदी गद्यानुवाद)

### तृतीय आश्वास

*तेलुगु मूल*
*मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा*

*हिंदी अनुवाद*
*आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी*

## तरिगोंडा नृहरि (संबोधन)

हे श्रीकर! निर्जर मौनिशीकर! सद्भक्त बृंद चित्त विहारा! राकेंदु वदना! शुभकर! प्राकट तरिगोंडा नृहरि! पाप विदारी!

सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने कहा। "हे सूत! हम ने ब्रह्मोत्सव क्रम को आश्चर्य के साथ सुना है। तब विष्णु के चक्र ने बहु चोर समूहों का संहार किया, ऐसा आपने बताया। उन का संहार उसने कैसे किया? उस के बारे में जानने की इच्छा हुई है। आप कृपया उस के बारे में बताइए।" तब सूत ने संशय दृष्टि से देखकर "हे मुनिगण! सुनिए! उस महान चक्र के बारे में बताने के लिए मैं कितना महान हूँ? फिर भी थोडा बहुत बताऊँगा।" कहते फिर कहना शुरू किया। "चक्र ने माधव की आज्ञा का पालन करते हुए संतोष के साथ निकल कर महान राजा के रूप में अपना वेश बदल लिया।

## चक्रराज के द्वारा अष्टदिशाओं के चोर समूहों पर विजय प्राप्त करना (चक्रराज की दिग्विजय यात्रा) :

चक्रराज अपने बल पर सहस्र बाहु के रूप में बना। मुकुट आदि रत्नाभूषण, रक्त वर्ण वस्त्र धारण करके, कालाग्नि समान, दुष्टों का संहार करनेवाले कराल चक्र के रूप में चमकते, विपुल रथ पर आरूढ़ होकर विविध आयुधों के साथ निकला। गंधर्वगणों को इकट्ठा करके मुद्गर आदि आयुधों को धारण करके साथ चलने पर चोर समूहों को मारने निकला। गुमुड नामक ज्वालामुखी सकल सेना का नेतृत्व करते बलवान अश्वों समेत घन रणभेरी बजाते कोलाहल आकाश को छूते संग्राम के लिए निकला।

## पूरब की दिशा :

इस प्रकार अनेक वैभवों के साथ और सेना के साथ चक्रराज ने शेषाचल से आरंभ करके पूरब में सागर तक वन-पर्वतादि को आक्रमण करके सकल साधु जनों को बाधा पहुँचानेवाले चोर समूहों को ढूंढ ढूंढ निकाल कर उन्हें परिवार समेत संहार करके साधु जनों को उन की बाधाओं से मुक्त किया। तब साधु जनों ने चक्रराज के आगे आकर इस रूप में विनति की है। "हे महाराज!

इस भूमि के लिए कोई राजा नहीं है। इसलिए चोरों ने साधु मानवों को अनेक प्रकार के कष्ट दिए। आप ने उनका संहार करके हमारी रक्षा की है। हे पुण्य पुरुष! आप कहाँ से और किस इच्छा से यहाँ आये हैं? आपने हमें नया जीवनदान दिया है। आप ऐसे पुण्यात्मा है। आप आगे भी यहीं रहिए महात्मा!'' ऐसे कहनेवाले सुजनों का आदर करते चक्र राजा ने उस भूमि के लिए एक राजा को ढूंढ कर उसे पट्टाभिषिक्त किया। 'विप्र आदि साधु जनों की रक्षा करो।' कहते उसे नियुक्त करके मनुष्यों को श्रीनिवासाद्री को पहुँचने के मार्ग के बारे में बतलाया। साथ ही उन मार्गों में अद्भुत रूप में धर्मात्माओं को भी रखा। फिर वहाँ पर जयभेरि बजाकर वहाँ से निकला। उस चक्रराज के साथ अश्व-सेना, रथ-सेना, पदातिदल आदि युद्ध के वाद्यों को बजाते अपने शौर्य का कीर्तन करते निकले।

## आग्नेय दिशा :

अत्यंत संतोष के साथ उस चक्रराज दुष्टों को ढूंढ ढूंढ कर तब आग्नेय दिशा में आया। चोरों को रणभेरि सुनाते उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। पहले मूर्ख बन कर साधु जनों को बाधा पहुँचानेवाले पापात्माओं पर आक्रमण किया। चक्रराज को देखकर दैत्य डर गए। तब उन्होंने भी आयुध धारण करके घोर अट्टहास करते युद्ध किया। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ। चक्रराज की ओर से ज्वालामुख और कुमदादियों ने अट्टहास करते हुए कालांतक बन कर चोरों से युद्ध किया। उन चोरों का संहार किया। बाकी चोर वहाँ गिरे शवों को कुचलते भाग निकले। तब गंधर्वों ने अपने गदाओं से उन का संहार किया। इस के अतिरिक्त गंधर्व जनों ने दिव्यास्त्र धारण करके बडे उत्साह के साथ शत्रुओं की ओर दौड कर रोष के साथ उन पर गिर पडे।

तब मृत्यु से बचे चोर भाग कर अपने प्रभुओं को अपनी पराजय के बारे में बताया। तब चोर प्रभुओं ने स्थलदुर्ग, वनदुर्ग, जलदुर्ग में रहनेवाले तथा त्रिपुर में रहनेवाले राक्षस बलों को बुला लिया। साथ ही विविध मायाओं से विचित्र आयुधों के साथ लडना शुरू किया। उन के पास तलवार, शूल, मुद्गर, खिंडिनाल, परशु, पट्टिस, शर, चाप, परिघ्यादि अनेक साधन थे। उन को ले आकर गंधर्व बलों के साथ युद्ध करना शुरू किया। तब गंधर्वों ने भी एक मुखी होकर चोर समूहों पर दावा बोल दिया। चित्र विचित्र ढंग से उन के बीच में घमसान युद्ध हुआ। तब युद्ध भूमि में भेरि निनाद, प्रमुख रण वाद्यों के बजते भीषण युद्ध वातावरण छा गया। चारों दिक युद्ध ध्वनियों से गूंज उठे। दोनों तरफ के वीरों ने एक दूसरे पर शूल भोंक कर, तलवारों से वार किया। गदा और मुसलों से एक दूसरे को मारा। इस प्रकार दोनों ओर के सैनिकों ने घमसान युद्ध किया। तब धरती पर रक्त की नदियाँ प्रवाहित हुई। तब चोर नायकों

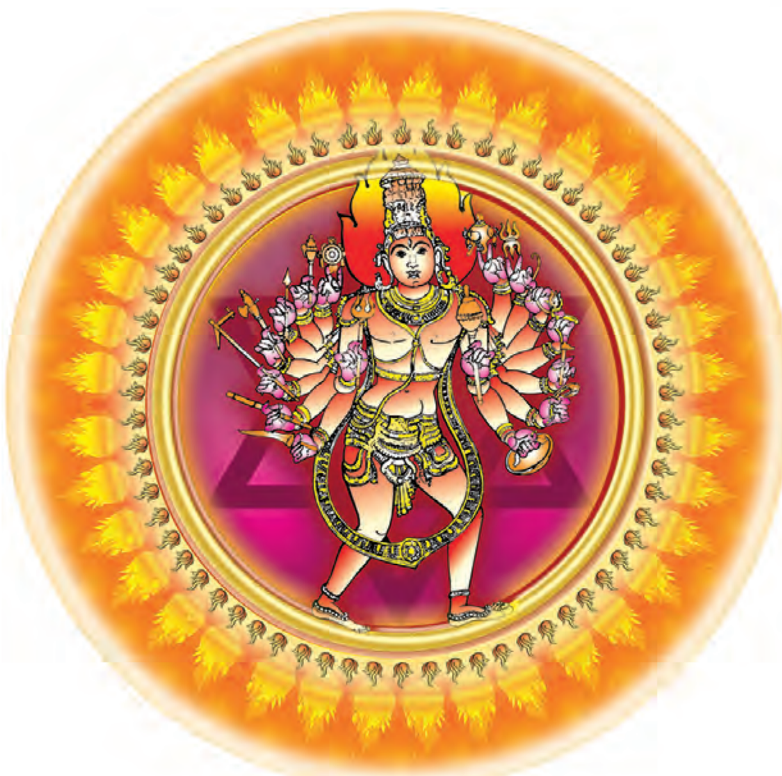

ने गंधर्वों को भगाते समय ज्वालामुख ने चक्रराज को यह समाचार दिया। तब चक्रराज ने अत्यंत रोष के साथ भीषण रूप धारण करके त्रिपुरांतक की तरह कालाग्नि बन कर महोग्र रूप धारण करके सहस्र बाहु और सहस्र हस्तों में तलवार उठाकर, बाकी सहस्र हाथों में वृक्षों के कांडों को पकड कर चोर नायकों पर दावा बोल दिया। शंख नाद करके शत्रुओं के समूहों पर अनेक भीषण बाण छोडे। बाणों की वर्षा करके उन्हें तितर बितर किया। उन में कुछ टूटे, कुछ कुचले, कुछ धंस गए। इस रूप में चोर समूह के सैनिकों का नाश हुआ। तब बाकी चोर अपने नायकों के साथ भाग निकले। भाग कर वे अपने दुर्गों में छिप गए।उन का पीछा करते हुए चक्रराज ने आग्नेय दिशा तक उन्हें खदेडा। दूर से ही उन पर बाण छोड कर उन सब को मार दिया। उन बाणों ने उन सब को जला डाला। दुर्गों में छिपे चोरों को भी बाणों ने नहीं छोडा। उन सब को जलाकर भस्म किया। तब धरती उन चोरों से मुक्त हो गयी।

इस प्रकार निश्शेष शत्रुओं का नाश करके चक्रराज ने धरती पर अमित वृष्टि करवायी। भूमि शीतल हो गयी। तब धर्माध्यक्ष नामक राजा को उस भूमि का राजा बना कर उसे राज्य पालन सौंप कर 'धर्म के साथ प्रजा पर शासन करो।' ऐसी आज्ञा देकर वहाँ से विजय के साथ निकला।

### दक्षिण दिशा :

चतुरंग सेना कोलाहल करते, उन के द्वारा पूजित होते चक्रराज तब दक्षिण दिशा की ओर निकला। वन दुर्गों में चोर समूहों को क्रम से ढूंढते पकडे गए चोरों का संहार करते आगे बढा। तब वहाँ रहनेवाले सज्जन जन ने उस चक्रराज का दर्शन करके वे अपने लिए ईश्वर समझ कर, वसुधा को बचाने आये हैं, समझ कर अत्यंत आनंद प्रकट किया। दूसरी ओर चोरों की ओर से यंक, वंक, पुलिंद, बिडाल, चालुक नामक दैत्य थे। वे अपने हाथों में विविध आयुध लेकर युद्ध के लिए तैयार हो गए। किसी के हाथ में गदा, किसी के हाथ में कुंत, किसी के हाथ में मूसल, किसी के हाथ में मुद्गर, इसी रूप में शूल, चाप, तलवार आदि प्रमुख साधन थे। वे अपने आप में इस रूप में बात भी कर रहे थे। 'इस रूप में हमारे सामना करनेवाले चोरों को मैं ही मार दूंगा।' ऐसा एक ने कहा। दूसरे ने कहा 'अपने गदा से उस पूरे समूह को मैं ही मार दूँगा। एक और ने कहा 'चलते आनेवाले पदाति सेना को मैं अकेला ही मार दूँगा।' एक और ने कहा 'प्रबल रथ चढ कर आनेवाले प्रभु की तरह मैं ही उन चोरों को मार दूँगा।' 'हाथियों से, घोडों से, अमित पदाती सेना से, रथ से आनेवाले वीरों से राजा के साथ मिल कर मैं अकेला ही मार दूंगा।' एक और मूर्ख ने अपने बल पर अतिविश्वास करके कहा। इस प्रकार पंच महापापी यंक, वंक, पुलिंद,

बिडाल, चालुक नामक दैत्यांश संभूत चोर अपने प्रचंड बल से चक्रराज से युद्ध करने तैयार हो गए।

अपने सामने की तरफ से आनेवाले इन दैत्यांश चोरों को चक्रराज ने देखा। उन्होंने उन्हें देखकर हुंकार किया। चक्रराज की तरफ से स्फुलिंगाक्ष, बलाध्याक्ष, ज्वालाकेश, गालांतक, रणाघ्न आदि वीरों ने चक्रराज के अभिमत से हाथों में करवाल, शूल, मुद्गर, खिंडिवाल, कांड, कोदंड आदि प्रमुख आयुध धारण करके अपने अपने निज बल से शत्रुओं पर टूट पडे। तब उन्होंने पंचपातकों को देखकर इस रूप में कहा। ''हे पापात्मा! सद्ब्राह्मणोत्तम को नुक्सान पहुँचाकर, अनाचार और अत्याचार करके उन के जीवन को आप ने नरकप्राय बनाया। यज्ञों को भंग करके, धर्म को नुक्सान पहुँचानेवाले आप का अंतिम काल समीप आ गया है। अब आप कहाँ छिपेंगे? आप का संहार करके अब आप के शरीरों को टुकडे टुकडे करके सारे प्राणियों और भूतों को आहार के रूप में डालेंगे। आप का संहार करके अब भूसुरों की रक्षा हम करेंगे। अब आप का कुछ भी नहीं चलेगा। आप हमें रोक नहीं सकते।'' ऐसा उन को ललकारते युद्ध करना शुरू किया।

अतिभीषण आकार से शस्त्रादि के प्रयोग से भी न डर कर, न हट कर, वंका, यंकादि राक्षांश चोर मूसल, गदा आदि आयुध लेकर स्फुलिंगादियों पर टूट पड कर अतिघोर युद्ध करने लगे। तब स्फुलिंगाक्ष ने डंकुंड नामक राक्षस को मारा। बलाध्यक्ष ने वंकु नामक राक्षस को मारा। ज्वालाकेश ने पुलिंद नामक राक्षस को मारा। कालांतक ने बिडालु नामक दैत्य को मारा। रणघ्न ने चालुकुंड नामक शत्रु का संहार किया। इस प्रकार कट कर गिरे यंकादि के बाकी सहचर भागकर वनदुर्गों में छिप गए। कुछ लोगों ने चक्रराज पर अपने आयुधों के साथ युद्ध किया। चक्रराज ने उन पर चक्र का प्रयोग करके उन के दो दो टुकडे कर डाले। बचे लोग डर कर जंगल में छिपने भाग गए। तब चक्रराज ने विचित्र बाण छोडे। वे बाण जाकर जंगल में, दुर्गों में छिपे राक्षसों का संहार करके लौट आये। तब दक्षिण भूमि निष्कंटक बन गयी। तब आकाश से देवतागण ने चक्रराज पर फूलों की वर्षा की। उन की अनेक प्रकार से स्तुति करके इस रूप में कहा। ''हे चक्र राजोत्तम! सकल पापात्माओं को मार कर यहाँ के साधु जनों की रक्षा आपने की है। आप के पराक्रम अवर्णित है। आप के पराक्रम का वर्णन शेष भी करने में असमर्थ हैं। और शेषाद्री के पश्चिमोत्तर में भी क्रूर चोर बसे हुए हैं। हे चक्रराज! आप उन का भी संहार करके धरती पर रहनेवाले सज्ञनों की रक्षा कीजिए।'' ऐसा कहते देवतागण चक्रराज से प्रार्थना करके अपने अपने स्थलों पर चले गए। इस प्रकार वहाँ चक्रराज ने शत्रुओं के संहार करने से ब्राह्मणादि को अत्यंत आनंद हुआ। उन्होंने चक्रराज की ओर देखकर इस रूप में विनति की है। ''हे विमलात्मा! इस देश में कोई धर्मात्मा राजा के रूप में नहीं है। इसलिए चोर सज्ञनों और ब्राह्मणों को सता रहे हैं। आप हमारे लिए भगवान के समान है। आपने सकल पापात्माओं को मार दिया है। हमारी रक्षा की है। हमारे लिए अच्छे राजा की नियुक्ति भी कर दीजिए।'' ऐसी उन की प्रार्थना सुनकर तब चक्रराज ने उस राज्य के लिए अनुकूल एक राजा की नियुक्ति की है। फिर 'धर्म का आचरण करते हुए राज्य करो' ऐसी सलाह उसे देकर ब्राह्मणों की तरफ देखकर इस रूप में कहा। ''आप सत्कर्म निष्ठ होकर यज्ञादि करते रहिए।'' ऐसा आदेश देने पर सभी ने उन्हें आशीर्वाद देकर बिदा किया। तब चक्रराज ने दक्षिण प्रदेश से वेंकटाद्री पर आने के मार्ग के बारे में उन्हें बताकर, रास्ते में सुजनों की नियुक्ति करके, उनकी देखभाल करते रहने का दायित्व राजा को सौंप दिया। तदूपरांत।

(क्रमशः)

# युग-युगों का प्रकाश - दीपावली

- श्री वेमूनूरि राजमौलि

अज्ञान-तिमिर को भगाकर ज्ञान-दीप जलाना ही विश्व-श्रेयस का मार्ग है। यही दीपावली का अर्थ - परमार्थ है।

आर्ष संप्रदाय में दीप ही परब्रह्म स्वरूप है। इसीलिए-

*''दीपं ज्योतिः परब्रह्म,*
*दीपं सर्वतमोपहः*
*दीपेन साध्यते सर्वं*
*संध्या दीपं नमोऽस्तुते।''*

कहकर आर्योक्ति है।

''अज्ञानांधकार को दूर भगाकर, सकल अभीष्ट-परमार्थों की सिद्धि प्रदान करने वाला परब्रह्म-स्वरूप-दिव्य परंज्योति का मैं प्रणाम-करता हूँ, ऐसा इसका भाव है। हमारे हृदय में स्थित ''अज्ञान'' नामक-नरकासुर का अंत करके ''ज्ञानपूर्ण-परमार्थ-ज्योति'' नामक श्री सत्यभामा-श्रीकृष्ण परंज्योति में लीन होने का आध्यात्मिक विकास तथा मोक्ष-पथ प्राप्त कर, उसके द्वारा विश्वकल्याण की इच्छा करना दिव्य-ज्ञान-दीपावली का परमार्थ है।

### श्रीकृष्ण-सत्या - धर्म-रक्षण-दीपावली :

कृतयुग में श्री वराह स्वामी द्वारा भूदेवी के गर्भ से जन्म लेने वाला नरकासुर लोक-कंटक बन गया। धर्म-संस्थापन के लिए द्वापरयुग में श्री महाविष्णु; श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए। सत्यभामा के रूप में भूदेवी का अवतरण हुआ। उनके द्वारा आश्वयुज (अश्विन) कृष्ण चतुर्दशी के दिन नरकासुर का वध हुआ। नरक-पीड़ा से मुक्त करनेवाले सत्यभामा-श्रीकृष्ण पर स्वर्ग से देवताओं ने पुष्प-वृष्टि की।

पृथ्वी के सारे लोगों ने अगले दिन अपने-अपने घरों में आनंद व उत्साह के साथ तैल-दीप (दीये) जलाकर त्यौहार मनाया; यही ''दीपावली'' है; ऐसा पौराणिक प्रसिद्ध कथा है। इस प्रकार अधर्म पर धर्म की विजय प्राप्त करने के संकेत में; मुख्यतः प्रकाश के त्यौहार के रूप में ''दीपावली'' मनाने का संप्रदाय बन गया।

## सम्राट बलि का स्वागत-दीपावली :

श्री महाविष्णु ने वामनावतार में सम्राट बलि से तीन पग जमीन माँगी। एक-पग से सारी पृथ्वी, दूसरे पग से आकाश का आक्रमण करके, अंत में सम्राट बलि के आमोद से तीसरा पग उसके सिर पर रखकर पाताल लोक पहुँचा दिया। सम्राट बलि का दादा, अपने भक्त प्रह्लाद की कामना के अनुसार प्रति वर्ष एक बार पृथ्वी पर आकर सारे लोगों का सुखमय जीवन देखकर आनंद प्राप्त करने का वरदान श्री महाविष्णु ने सम्राट बलि को अनुगृहीत किया। दान-गुण-संपन्न सम्राट बलि पृथ्वी पर आने से प्रजा ने बड़े संतोष के साथ दीप जलाकर स्वागत-सत्कार किया; ऐसा कहा जाता है। वही दीपावली बन गयी। तब से याने कृतयुग से ही दीपावली का त्यौहार मनाया जा रहा है; ऐसा भविष्योत्तर-पुराण में धर्मराज (युधिष्ठिर) को श्रीकृष्ण ने बताया। यही दीपावली

की विशेषता है। दीपावली के अगले दिन सम्राट बलि की पूजा किया करते हैं।

अतः वह ''बलि पाड्यमी'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

## यमधर्मराज की पूजा :

''नरक'' का अर्थ ''यमलोक'' है; ऐसा इसका स्थूलार्थ है। ''नरक लोक की विमुक्ति के लिए यम की भक्ति व श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना संपन्न किया जाने वाला विशेष पर्व नरक चतुर्दशी है'' - ऐसा व्रतचूडामणि में, यमधर्मराज का अनुग्रह पाने सूचित पूजा-विधान से ज्ञात होता है। यमधर्मराज की पूजा के रूप में दीप जलाने का त्यौहार, दीपावली है। इससे नरक की भीति (डर) दूर होकर स्वर्ग की प्राप्ति होती है; ऐसा पुराणों में वर्णन मिलता है।

*चतुर्दश्यांतु ये दीपान नरकाय ददंति च।*
*तेषां पितृगणाः सर्वे नरकात्स्वर्गमाप्नुयुः।।*

आश्वयुज (आश्विन) कृष्ण चतुर्दशी के दिन जो कोई दीप जलाकर यमधर्मराज की पूजा करता है, उसके पितृदेवता नरक से विमुक्त होकर स्वर्ग की प्राप्ति करते हैं; ऐसा इसका अर्थ है। इसलिए ''नरक चतुर्दशी'' के दिन यम की पूजा करके अनेकों पंक्तियों में दीप जलाने चाहिए। प्राचीन ग्रंथों से विदित होता है कि हम दिव्य कान्तियों द्वारा पितृ देवताओं को स्वर्ग-मार्ग दिखाने वाले बन जायेंगे।

## रामराज्य-दीपावली :

त्रेतायुग में रावण का वध करके सीता, लक्ष्मण, हनुमान इत्यादि के साथ श्रीराम अयोध्या पधार कर पट्टाभिषिक्त हुए। अयोध्या की प्रजा के साथ-साथ सभी लोकों के लोगों ने बड़े उत्साह के साथ दीप जलाकर

उत्सव मनाया। उस दिन से प्रजा ''राम राज्य-दीपावली'' मनाती आ रही है। ऐसा एक अन्य कथा प्रचार में है। उत्तर भारत में रावण-वध के संकेत में दीपावली मनाने का रिवाज बन गया।

### विक्रमार्क - विजयोत्सव :

माता काली के अनुग्रह से दिव्य-शक्ति-संपन्न सम्राट विक्रमार्क ने उज्जैनी को राजधानी बनाकर पूरे राज्य का महोज्ज्वल व एकच्छत्राधिपत्य से अनेकों वर्ष पालन किया। उनके राज्याभिषिक्त होने के दिन से विक्रम शक परिगणना में आया।

उस दिन से सारे भारतीयों ने बड़ी उमंग के साथ 'दीपावली' मनाना आरंभ किया; ऐसा पण्डितों का मत है। इनमें से श्रीराम का राज्याभिषेक तथा विक्रमार्क-विजय की गाथाएँ उत्तर भारत में बहुल प्रचार में हैं। किन्तु नरकासुर-वध तो देश भर में मुख्य रूप से उत्तर भारत में प्रसिद्ध है।

### लक्ष्मी-पूजा :

लक्ष्मी देवी सकलैश्वर्य प्रदायिनी है। ''दीप लक्ष्मी नमोस्तुते'' कहकर दीप को महालक्ष्मी-स्वरूप मानकर दीपावली के दिन बड़ी भक्ति व श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना करते हैं।

मुख्यतः उत्तर के राज्यों में व्यापारी लोग लक्ष्मी की पूजा करके नई खाता-पुस्तकें पूजा-मंदिर में रखते हैं। अपना व्यापार जय प्रद (सुचारू रूप से चलने) होने लक्ष्मी-देवी की प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार अनेकों पुराण-कथाएँ और गाथाएँ व्याप्ति में है।

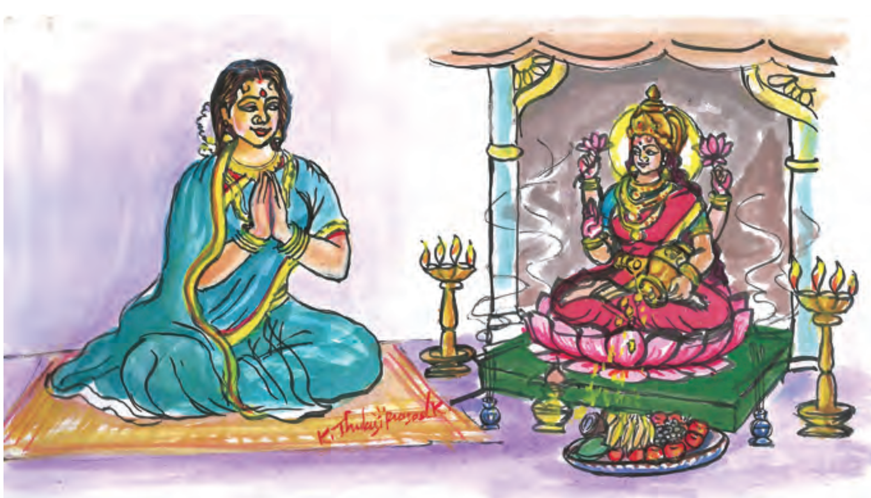

### प्रत्येक दिन की विशिष्टता :

दीपावली पाँच दिनों का पर्व है। प्रत्येक दिन की अपनी एक विशिष्टता है।

### धन-त्रयोदशी (धनतेरस) :

आश्वयुज(अश्विन) कृष्ण-त्रयोदशी से दीपावली का संरंभ प्रारंभ होता है। उस दिन को ''धन-त्रयोदशी (धनतेरस) कहते हैं। वह क्षीर सागर से श्री महालक्ष्मी के आविर्भाव होने का दिन है।

### नरक चतुर्दशी :

जिस दिन प्रजा-कंटक नरकासुर का वध हुआ, उस आश्वयुज कृष्ण चतुर्दशी को ''नरक चतुर्दशी'' कहते हैं।

### दीपावली :

आश्वयुज अमावास्या के दिन ''दीपावली'' मनाते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस दिन सारे गृह को दीपों से अलंकृत करने पर माता लक्ष्मी हमेशा अपने घर में स्थिर निवास बना लेती है।

### बलि पाड्यमी :

वामनावतारी विष्णु के तीसरे पग से पाताल लोक जानेवाला सम्राट बलि प्रति वर्ष कार्तिक शुक्ल पाड्यमी के

भगवान बालाजी का कृपा-कटाक्ष, आशीर्वाद आप और अपने परिवार पर सदा भरपूर रहने के लिए सप्तगिरि की ओर से पाठकों, लेखक-लेखिकाओं और एजेंटों को 'दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएँ'।

**- प्रधान संपादक**

दिन भूलोक में आता है; ऐसा कहा जाता है। इसलिए इस दिन को ''बलि पाड्यमी'' कहा जाता है।

## यम द्वितीया (भाई दूज) :

कार्तिक शुक्ल द्वितीया के ''यम-द्वितीया'', ''भ्रातृ-द्वितीया'' नाम भी हैं। यमधर्मराज को उसकी बहन यमुना देवी ने इस दिन अपने घर आमन्त्रित करके आतिथ्य दिया। इससे उसने संतुष्ट होकर वर दिया कि इस दिन जो अपनी बहन के घर पर भोजन करता है, उसे अपमृत्यु का भय अथवा नरक-पीड़ा नहीं होगी। इसी को 'भगिनी हस्त भोजन' कहते हैं। इसे उत्तर भारत के लोग ''भाई दूज'' नाम से पुकारते है। लोगों का पाप-पुण्यों का चिट्ठा लिखने वाले चित्रगुप्त की जयंती भी इसी दिन है।

इन सबका स्मरण करके हम भी आनंद के साथ त्यौहार मनायेंगे।

**सर्वेजनाः सुखिनो भवंतु।**

(गतांक से)

# तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

## (तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

### अध्याय - 11

## नैमिशारण्य से ऋषि-मुनियों का वेंकटाद्रि-आगमन

(वराह पुराण, भाग - 1, अ. 62)

नैमिशारण्य में एक समय अनेक ऋषि-मुनि इकट्ठे हुए थे और वह भी सूत महर्षि के आश्रम में। उनसे उन लोगों ने अनेक पौराणिक गाथाएँ सुनीं। उसी संदर्भ में सूत जी ने उन्हें श्वेत-वराह-कल्प (श्वेत वराह स्वामी) की गाथा सुनायी थी। साथ-साथ उसी वृत्त से जुडे श्री वेंकटेश्वर के अवतरण की गाथा भी विशेष रूप से उनको सुनायी गयी। इसी सिलसिले में वेंकटाचल पर्वत, वहाँ के पवित्र तीर्थ आदि के महत्व का विवरण सूत जी ने ऋषि-मुनियों को दिया। वैसे तो सूत जी ख्यात पौराणिक थे। पौराणिक गाथाओं के अच्छे ज्ञाता थे। उत्सुकता से श्री वेंकटाचल और श्री वेंकटेश्वर की महानता की जानकारी प्राप्त करने के बाद उन ऋषियों ने पवित्र वेंकटाचल क्षेत्र दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की। साथ-साथ श्री वेंकटेश्वर की अर्चना पद्धति और आराधना की प्रविधि के बारे में विस्तार से समझाने की प्रार्थना ऋषियों ने सूत जी से की। उनके उत्साह और पवित्र कामना का आदर करते हुए सूत जी ने कहा- ''हे ऋषि-मुनियों! आपको अष्टोत्तरशतनाम मंत्रों से उनका नाम स्मरण करना है। भगवान के एक सौ आठ नामों का नित्य स्मरण भक्त के लिए आवश्यक है। भगवान तुलसी माला और तुलसीदल पसंद करते हैं। फूल भी उन्हें प्रिय हैं। उपयुक्त रूप में इनसे पूजा कीजिए। वेंकटाचल पर्वत श्रेणियों को देखते ही आपको नमन करना है। पहले कपिलतीर्थ में पवित्र स्नान करना है। श्री कपिलेश्वर स्वामी वेंकटाचल के पद तल में विराजमान हैं। इसके बाद पर्वत पर अनेक तीर्थ हैं जो रास्ते में ही पडते हैं। उन तीर्थों में भी स्नान कीजिए। अंत में भगवान के मंदिर के पास ही स्वामिपुष्करिणी है। पहले स्वामिपुष्करिणी के पवित्र-स्नान के पश्चात् उसी पुष्करिणी तट पर विलसित श्री भू-वराह स्वामी का दर्शन कीजिए। पूजा कीजिए। इसके बाद ही आपको श्री वेंकटेश्वर भगवान का दर्शन करना और उनके 'अष्टोत्तरशतनाम' के साथ पूजादि सेवाएँ करनी हैं। वैसे भगवान का नाम स्मरण मत भूलिएगा।''

सूत जी से आवश्यक सूचनाएँ और मार्ग दर्शन लेकर महामुनियों ने वेंकटाचल की यात्रा आरंभ की। नैमिशारण्य से निकल कर गंगा, गोदावरी, कृष्णा तथा अन्य पवित्र नदियों में पवित्र स्नान करते हुए वे वेंकटाचल पहुँचे।

वेंकटाद्रि के दर्शन मात्र से उनमें आनंद की लहर उठी। नाम कीर्तन के साथ नाचे-गाये। कपिलतीर्थ में पवित्र स्नान किया। कपिलेश्वर का दर्शन किया। स्वामिपुष्करिणी में नहा कर श्री भू-वराह की आराधना संपन्न की। अंततोगत्वा श्री वेंकटेश्वर भगवान की सन्निधि में पहुँचे। उनके सामने विनम्र होकर प्रार्थना की- ''हे हरि! आपकी दिव्य प्रभा का वर्णन करना हम जैसों की शक्ति से बाहर की बात है। आपके गुणों को तो हम किस सीमा तक जान सकते हैं? अद्‌भुत गुण सामान्य की बुद्धि की पहचान से परे ही ठहरते हैं न! धर्म की स्थापना के लिए आप त्रिविक्रम बने थे। वामन के रूप में अवतरित होकर आपने तीनों लोकों को नाप कर ही त्रिविक्रम हुए हैं न! आप को शत-शत नमन! हे प्रभु! आप इस विश्व के विधाता हैं। समस्त विश्व तो आपकी सृष्टि में एक चौथाई मात्र है। व्योमं अर्थात् जल और आकाश तो आपकी सृष्टि के तीन बटा चार अंश ही है। आप परब्रह्म हैं। वेदों के कर्ता आप हैं। चतुर वर्ण आप से सृजित हैं। अग्नि, सूर्य और चन्द्र आदि का अस्तित्व ही

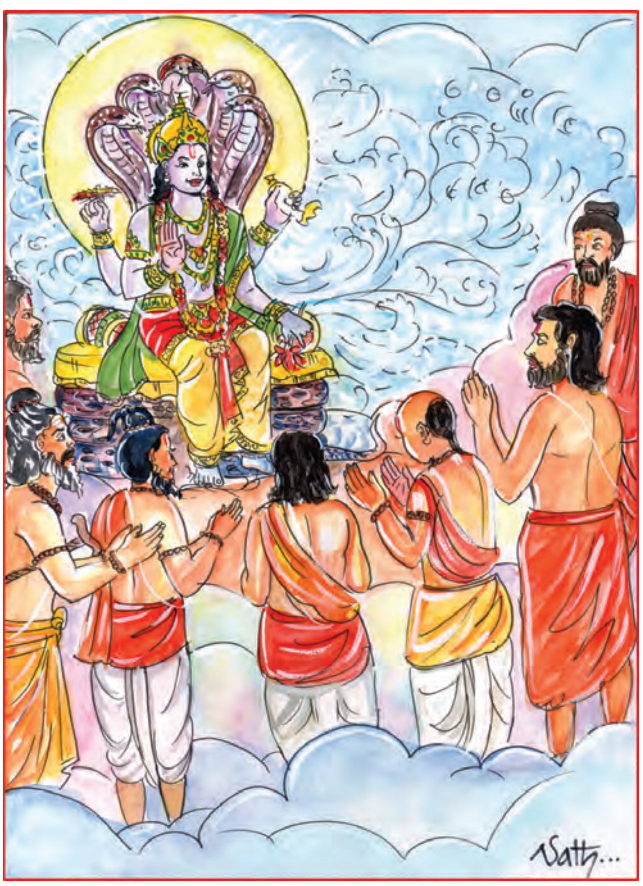


आप के कारण है। हे प्रभु! आप विश्वात्मा हैं, विश्व स्वरूपा हैं। नाम, रूप और गुण सब अगणित हैं। वेद आपकी विभूति का वर्णन कर बाद में ''नेति नेति'' कहते हैं। उनका स्वर यही बताता है कि भगवान इतना ही, इतना ही नहीं और भी हैं!'' इस प्रकार भगवान की स्तुति कर वे उनके चरणों में प्रणमित हुए। अष्टोत्तरशतनामों के साथ पूजादि कार्य संपन्न किये।

ऋषि-मुनियों की श्रद्धा और भक्ति से भगवान वेंकटेश्वर अत्यंत प्रसन्न हुए। उनसे कहा- ''हे मुनियों! जब आप सब मिलकर सूत जी से वेंकटाचल माहात्म्यम् सुन रहे थे, तभी मैंने उसका फल आपको प्रदान कर दिया था। वह फल आपको दीर्घकालीन तपस्या से प्राप्त होनेवाले फल से अधिक है। अब आप जो भी चाहेंगे उसे प्रदान करने के लिए तैयार हूँ। जो कोई भी सुदूर प्रान्त में रहता है, अगर वह वेंकटाचल माहात्म्यम् का श्रवण करता है तो उसे मैं संपूर्ण फल प्रदान करता हूँ। उसकी कामनाएँ अवश्य पूरी हो जाती हैं। जो कन्या मास (सितंबर-अक्तूबर जब उनके ब्रह्मोत्सव मनाये जाते हैं) में संपन्न होनेवाले ब्रह्मोत्सवों में भाग लेते हैं उनको और अधिक फल प्रदान करता हूँ। इस पृथ्वी पर सब कुछ भोगने के पश्चात् मैं उन्हें मोक्ष भी प्रदान करता हूँ।''

भगवान वेंकटेश्वर के वैभव को देखकर हतप्रभ हुए ऋषि-मुनियों ने वेंकटाचल पर ही पाँच वर्ष रहकर तपस्या की। अनेक तीर्थों में पुण्य स्नान किये। धार्मिक कार्यों का निर्वाह किया। अंत में नैमिशारण्य की ओर चले। वहाँ पाँच वर्षों तक ठहरे। सूत महर्षि से मिले। भगवान, पवित्र पर्वत, तीर्थ आदि के बारे में उन्होंने पहले जो कुछ कहा था उस सब की अनुभूति पाकर वे तृप्त हुए और भगवान की लीलाओं को उनके मुँह से सुनकर उनका दर्शन किया। इसीलिए सूत जी को पवित्र मन से धन्यवाद दिया। उनसे पुनः आशीर्वाद लेकर अपने-अपने आश्रमों में लौटे और भगवान की तपस्या में लीन हो गये।

**ग्यारहवाँ अध्याय समाप्त**

# केदार गौरी व्रत

- डॉ.जी.मोहन नायुडु

हिंदू संस्कृति के अनुसार व्रतक्रिया को संकल्प, सत्कर्म और अनुष्ठान भी कहा जाता है। व्रत करने से मनुष्य की अंतरात्मा शुद्ध होती है। इससे ज्ञान शक्ति, विचार शक्ति, बुद्धि, श्रद्धा, भक्ति तथा पवित्रता की वृद्धि होती है। केवल एक व्रत या उपवास अनेक शारीरिक रोगों का नाश करता है। भारतीय संस्कृति में व्रतों का अपना विशेष महत्व है। आयुर्वेद के अनुसार व्रत से अनेक रोगों का नाश होता है और शरीर की शुद्धि होती है। हिंदू संस्कृति में अनेक व्रत प्रचलन में हैं उनमें से 'केदार गौरी व्रत' भी एक है।

### केदार गौरी व्रत कथा :

केदार गौरी व्रत, जिसे केदारेश्वर व्रत भी कहते हैं। यह एक पवित्र हिन्दू त्योहार है। यह व्रत भगवान शिव की पूजा करने हेतु किया जाता है। देवी पार्वती ने केदार गौरी व्रत किया क्यों कि वह भगवान शिव का हिस्सा बन सकें। केदार गौरी व्रत उत्तर भारत में कार्तिक माह की अमावास्या को मनाया जाता है। भारत के अन्य क्षेत्रों में यह अश्विन माह की अमावास्या को मनाया जाता है। यह व्रत पूरे भारत में मनाया जाता है लेकिन विशेष रूप से दक्षिण भारत में बडे उत्साह और आनंद के साथ मनाया जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह व्रत देवी पार्वती से किया गया। एक बार परमेश्वर और पार्वती कैलास में नवरत्नों से बने सिंहासन पर विराजमान थे। ब्रह्म, विष्णु, देवेन्द्र, देवतागण, ऋषि और गंधर्व उनकी परिक्रमा करने आते हैं तथा उनका आशीर्वाद पाते हैं। लेकिन एक ऋषि ने देवी पार्वती पर ध्यान न देकर भगवान शिव की परिक्रमा की जिससे देवी पार्वती को बहुत क्रोध आया। माता पार्वती ने शिव से कहा कि ''हे देव ये सभी देवता हम दोनों का आशीर्वाद लेने आते हैं, तो यह ऋषि केवल आपका आशीर्वाद क्यों चाहता है?'' तब भगवान शिव ने उत्तर दिया कि ''हे पर्वतराज की बेटी ऋषि को धन नहीं चाहिए, वह मोक्ष पाना चाहता है। इसलिए वह मेरा आशीर्वाद चाहता है।'' शिव की ये बातें सुनकर पार्वती और भी कृद्ध हुई तथा उन्होंने ऋषि की सारी शक्ति अपने हथियार से छीन ली। शक्तिहीन ऋषि न चल सकने के कारण फर्श पर गिर

पडे। भगवान शिव ने ऋषि से पूछा कि आपको क्या हुआ? ऋषि ने उत्तर दिया कि पार्वतीजी ने उनकी शक्ति छीन ली क्योंकि मैंने उनकी परिक्रमा नहीं की थी। शिवजी बडे दयालु थे इसलिए उन्होंने उसे खडे होने के लिए एक छड़ी दी। छड़ी की सहायता से ऋषि शिव के चारों ओर परिक्रमा करके उनकी मदद के लिए धन्यवाद समर्पित किया। इसके बाद ऋषि अपने आश्रम को वापस लौटे। इस घटना को लेकर शिवजी ने पार्वती पर अपना क्रोध प्रकट किया, तो पार्वती ने शिवजी से कहा कि ''आप मुझे पसंद नहीं करते हैं, तो मुझे यहाँ रहने की कोई जरूरत नहीं है।'' फिर पार्वतीजी कैलास छोडकर पृथ्वी पर चली जाती है। देवी पार्वती गौतम ऋषि के पास जाकर यह पूछती है कि मैं भगवान शिव के शरीर में कैसे समाहित हो जाती हूँ? गौतम ऋषि ने उत्तर दिया कि आप यदि केदार गौरी व्रत करेंगे तो आपकी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। जब पार्वती ने पूर्ण श्रद्धा के साथ इस व्रत का संपन्न किया, तो भगवान शिव ने संतुष्ट होकर उन्हें अपने वाम भाग दे दिया। उसी समय से शिव के इस रूप को 'अर्धनारीश्वर' की संज्ञा दी गयी।

## केदार गौरी व्रत का महत्व :

स्कंद पुराण और अन्य हिंदू धार्मिक ग्रंथों में केदार गौरी व्रत को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। इस व्रत से समस्त मनोकामनाओं की सिद्धि होती है। इसलिए देवताओं ने भी अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए केदार गौरी व्रत किया। लोगों का विश्वास है कि यह व्रत करनेवाली अविवाहित महिलाओं को शीघ्र ही विवाह होता है। मुख्य रूप से यह व्रत विवाहित महिलाओं द्वारा किया जाता है ताकि उनके पति लंबे समय और स्वास्थ्य जीवन जी सकें। अर्धनारीश्वर की तरह पति-पत्नी अविभाज्य होंगे।

## केदार गौरी व्रत की विशेषताएँ :

1) केदार गौरी व्रत मुख्य रूप से दक्षिण भारत में मनाया जाता है।

2) केदार गौरी व्रत एक धार्मिक अनुष्ठान है जो 21 दिनों तक चलता है।

3) केदार गौरी व्रत के अंतिम दिन अर्थात् अमावास्या को सभी भक्त उपवास करते हैं।

4) मान्यताएँ हैं कि जब कोई व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा के साथ केदार गौरी व्रत के नियमों का पालन करते हुए उपवास रखता है, तो उसे दीर्घायु, स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि मिलती है।

## केदार गौरी व्रत पूजना की विधि :

1) केदार गौरी व्रत के दिन शिवजी के अर्धनारीश्वर रूप की पूजा होती है।

2) व्रत के दिन भक्त अपनी क्षमता के अनुसार पूरा दिन व्रत करते हैं या एक समय फलहार करके इस व्रत का संपन्न करते हैं।

3) केदार गौरी व्रत को शुद्ध मन से करना चाहिए।

4) केदार गौरी व्रत की पूजा लगातार 21 दिनों तक चलती है। सभी भक्त पवित्र स्थान पर कलश स्थापित करके नियमित रूप से उसकी पूजा करते हैं।

5) कलश को एक रेश्मी कपडे से ढका जाता है, जिसके ऊपर चावल का एक ढेर रखा जाता है।

6) कलश के चारों ओर 21 धागे बांधे जाते हैं। इस व्रत में 21 पूजारियों को आमंत्रित करते हैं।

7) केदार गौरी व्रत में स्थापित कलश को भगवान केदारनाथ का प्रतिबिंब माना जाता है।

8) कुंकुम, चंदन, अक्षत, कस्तूरी, तांबूल, फूल, फल अर्पित करके कलश की पूजा की जाती है।

9) कलश की पूजा करने के बाद भगवान शिव के मंत्रों का जप किया जाता है। केदार गौरी व्रत में शिवजी को श्रीफल के साथ-साथ 21 प्रकार के भोज्य पदार्थों से युक्त विशेष भोग चढाया जाता है।

10) पूजा संपन्न होने के बाद भक्तों को प्रसाद दिया जाता है।

## निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि हिंदू संस्कृति में व्रत और त्योहारों का बडा महत्व है। व्रत और त्योहारों से मन को आनंद मिलता है और मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। पूरे भारत में केदार गौरी व्रत का संपन्न होता है। यह व्रत शिव भक्तों द्वारा किया जाता है। भगवान शिव के प्रति भक्ति भाव दिखाते हुए केदार गौरी व्रत संपन्न किया जाता है। इसके साथ-साथ देवी पार्वती के सम्मान में 21 दिनों तक उपवास रखा जाता है। यह व्रत सितंबर के मध्य में तमिल माह पेरटासी(पुरट्टासी) में आरंभ होकर दीपावली के दिन समाप्त होता है। यह व्रत दीर्घायु, स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए भगवान शिव की कृपा पाने के उद्देश्य से किया जाता है।

नीति पद्यम्

# आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

## विद्वत्पद्धति

इसुक बोग्गु, रायि, इनुमुनु स्वर्णंबु
कसवु पोच वलेनु गनुचुनुंडि
परम पदमु गांचु परिणाम मंदुन
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।24।।

सच्चे विद्वान् की दृष्टि में सभी सांसारिक वस्तु समान रहती हैं। पत्थर, कोयला, रेत, लोहा और सोना इन सभी चीजों को वह तिनके के बराबर देखता है। ऐसी सम-दृष्टि के परिणाम के रूप में उसे परमपद प्राप्त होता है।

दि. 18-9-2023 को तिरुमल श्री बालाजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर आं.प्र. राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी ने पवित्र रेशमी वस्त्र को समर्पित किया। इस संदर्भ में स्वामीजी का दर्शन करके, तीर्थ प्रसाद को स्वीकार किया। तदनंतर 2024 नूतन वर्ष के कैलेंडर और डायरियों का विमोचन किया। कलंकारि स्वामीजी का चित्रपठ को भेंट दिया। इस कार्यक्रम में आ.प्र.राज्य के उप मुख्यमंत्री, अन्य मंत्रीगण के साथ ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष एवं न्यास-मंडली के अन्य सदस्य गण और अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

दि. 18-9-2023 से दि. 26-9-2023 तक तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया। इस संदर्भ में स्वामीजी एवं उभय देवेरियों के साथ विविध वाहनों पर सुसज्जित होकर आरूढ़ हुए। चार माडावीथियों में भक्तों को दर्शन देकर अनुग्रह प्रसाद किया।

तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर ति.ति.देवस्थान के श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी, श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटा) जीयर स्वामीजी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अन्य सदस्य, ति.ति.दे. के दोनों संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारियों के साथ ति.ति.दे. अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने विविध वाहन सेवाओं में भाग लिया।

दि. 27-9-2023 से दि. 29-9-2023 तक तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी के मंदिर में पवित्रोत्सव कार्यक्रम को संपन्न किया। इस संदर्भ में शास्त्रोक्त रूप में पवित्र प्रतिष्ठा, पवित्र समर्पण, पूर्णाहुति आदि वैदिक क्रतु को आयोजित किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., के साथ-साथ अन्य उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि. 25-9-2023 से दि. 27-9-2023 तक तिरुपति श्री गोविंदराज स्वामीजी के मंदिर में पवित्रोत्सव कार्यक्रम को संपन्न किया। इस संदर्भ में शास्त्रोक्त रूप में पवित्र प्रतिष्ठा, पवित्र समर्पण, पूर्णाहुति आदि वैदिक क्रतु को आयोजित किया।

# हरि-हर का प्रिय पवित्र मास कार्तिक

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

काल अनंत और शाश्वत है। काल ईश्वराधीन है। ईश्वर ही काल के नियंत्रक हैं। ईश्वराराधना करनेवाले मनुष्य के लिए प्रत्येक काल, प्रत्येक क्षण महत्व का है। फिर भी मनुष्य काल के साथ ईश्वराराधना के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण काल का विभाजन कर लिया है। काल को युग, शताब्दी, वर्ष, मास, दिन आदि के रूप में विभक्त कर लिया है। फिर प्रकृति की ऋतुओं के तथा प्रकृति से प्राप्त होनेवाले ईश्वराराधना के लिए आवश्यक पदार्थों की उपलब्धी के अनुसार पूजा, व्रत, अनुष्ठान आदि का निर्णय कर लिया है। एक वर्ष में बारह मास और एक मास के तीस दिन, इस के अतिरिक्त अमावास्या, पौर्णमी की गणना से काल निर्णय कर लिया है। भारतीय संस्कृति और संप्रदाय की मूल नींव यही है।

मनुष्य तमो, रजो और सत्त्व गुणों से पैदा होता है। अपने जीवन काल में अनेक पाप कार्य करता है। उन पापों से तथा अपने सांसारिक दुःखों से मुक्त होने का एक मात्र रास्ता ईश्वराराधना है। इसी के लिए भारतीयों ने मासों की गणना से व्रत, पूजा, अनुष्ठान आदि की परंपरा बनायी है। कार्तिक मास, कार्तिक व्रत, कार्तिक स्नान, कार्तिक पुराण आदि इसी रूप में हिंदुओं के लिए अति पवित्र बने हैं। स्नान, उपवास, दान, व्रत आदि इस मास में करने से विशेष फलश्रुति का विश्वास किया जाता है। विशेष बात यह है कि इस मास सकल देवताओं के साथ-साथ हरि और हर दोनों की विशेष पूजा की जाती है। हरि और हर दोनों इस मास की पूजा के अधिनायकों के रूप में प्रतिष्ठित और पूजित हैं।

## कार्तिक मास का नाम :

चांद्र मान के अनुसार मासों में आठवाँ और शरद ऋतु में आनेवाला दूसरा मास कार्तिक मास है। इस मास के पौर्णमी के दिन चंद्र कृत्तिका नक्षत्र के इर्दगिर्द संचरण करते हैं। इसलिए इस मास का नाम 'कार्तिक मास' पडा है। एक मान्यता यह भी है कि शिव पुत्र षण्मुखी कार्तिकेय के नाम से इस मास का नामकरण किया गया है। कृत्तिका नक्षत्र के साथ भी इसे जोडा जाता है। कृत्तिका नक्षत्र नक्षत्रों में विशिष्ट है। देवताओं में प्रथम देवता अग्नि देव इस का अधिपति है। अग्नि नक्षत्रों में माने जानेवाले कृत्तिका, उत्तरा, उत्तराषाड में कृत्तिका प्रथम नक्षत्र है। वेदों के अनुसार सृष्टि का आरंभ कृत्तिका नक्षत्र से ही हुआ है। अग्निदेव छे मुखी हैं। कृत्तिकाएँ भी छे नक्षत्र हैं। आकाश के ये छे नक्षत्रों ने मातृ मूर्तियाँ बन कर कार्तिकेय को थन-पान दिया। तब कार्तिकेय ने अपने छे मुखों से थन-पान किया। इस रूप में कृत्तिकाओं से पोषित होने के कारण उन का नाम कार्तिकेय और षण्मुखी पडा।

## कार्तिक मास का महत्व :

ऋतुओं में शरद और मासों में कार्तिक मास का महत्व अत्यधिक है। यह मास शिव और केशव दोनों के लिए अत्यंत प्रीतिकर मास समझा जाता है। शिव पुत्र कुमार स्वामी का पालन पोषण कृत्तिकाओं ने किया है। इसलिए शिव भगवान को कार्तिक मास अत्यंत प्रीतिकर है। कार्तिक मास में उपवास, वनभोज और दीपोत्सव महत्वपूर्ण होते हैं।

स्कंद पुराण में कार्तिक मास के महत्व के बारे में कहा गया है--

*न कार्तिक समो मासः*
*न शास्त्रं वेदसन्निभं।*
*न तीर्थं गंगाया तुल्यं*
*न दैवम विष्णुना समम।।*

यानी कार्तिक मास के समान दूसरा मास नहीं है। वेद के समान दूसरा कोई शास्त्र नहीं है। गंगा के समान दूसरा कोई तीर्थ नहीं है। उसी प्रकार श्री महाविष्णु से तुल्यमान कोई दूसरा देव नहीं है।

## कार्तिक मास में हरि-हर की पूजा :

कार्तिक मास शिव-केशव दोनों के लिए अत्यंत प्रीतिकर मास है। इसलिए दोनों की अर्चना इस मास में की जाती है। इस मास में पाड्यमी, चविती, पौर्णमी, चतुर्दशी, एकादशी, द्वादशी की तिथियों में शिव-पार्वती के अनुग्रह के लिए स्त्रियाँ विशेष व्रत रखती हैं। यह पूरा मास त्योहार के दिन माना जाता है। देश भर के सारे शैवालयों में रुद्राभिषेक, रुद्र पूजा, लाख बिल्व दलों के साथ पूजा, माई के लिए लाख कुंकुमार्चन करने से शिव-पार्वती प्रसन्न होकर भक्तों को विशेष वरदान देते हैं। भोला शंकर भक्तों की आशाओं निराश नहीं करते हैं। इसलिए उन का एक नाम आशुतोष भी पडा है। 'हरिः ओम नमस्ते अस्तु भगन्विश्वेराय महा देवाय त्रयंबकाय त्रिपुरांतकाय त्रिकालाग्निकालाय कालाग्नि रुद्राया नीलकंठाय मृत्युंजयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः' प्रत्येक शिवालय में इस रुद्र नमक प्रतिध्वनित होता सुनायी पडता है।

## कार्तिक पुराण :

हरि-हर दोनों की उपासना के लिए यह मास क्यों अनुकूल है। सूत के द्वारा सुनाये गये पुराण से पता चलता है। भारतीय सकल पुराणों का स्रोत स्थल नैमिशारण्य में सूत महर्षि ने ऋषि-मुनियों को सांसारिक दुःखों से मुक्त होने तथा सकल शुभ प्राप्त करने के लिए सरल मार्ग बतलाते हुए कार्तिक पुराण के बारे में बताया। उन के अनुसार पुण्यात्माओं को ही इस मास में व्रत करने का अवसर प्राप्त होता है। दुष्टात्माओं को उन के अपने कर्म फल की पूर्ति होने तक ऐसा अवसर प्राप्त नहीं होता है। इस मास में आनेवाले सोमवार, चविती, एकादशी, द्वादशी, पौर्णमी अत्यंत पवित्र दिन माने जाते हैं। उन दिनों में कम से कम पुण्य नदियों में स्नान करने से, उपवास दीक्षा रखने से, रुद्राभिषेक, लाख बिल्वार्चन, लाख कुंकुमार्चन, ललित, विष्णु सहस्रनामावली का पारायण करने से, नित्य उभय संध्याओं में दीपाराधना करने से विशेष फलश्रृति और पुण्य प्राप्त होता है। कार्तिक मास के तीसों दिन पुण्य नदी स्नान करने से अनंतकोटि पुण्य फल प्राप्त होगा। कार्तिक मास में प्रदोष काल विशेष महत्व रखता है। सूर्यास्त के बाद तीन घडियों (एक घंटे का समय) को 'प्रदोषोरजनीमुखम' रात के आंभिक काल को ही प्रदोष का समय माना जाता है। इस रूप में प्रतिदिन होनेवाले समय को नित्य प्रदोष का समय माना जाता है। महात्माओं ने इसी को 1.नित्य प्रदोष, 2.पक्ष प्रदोष, 3.मास प्रदोष, 4.महाप्रदोष काल कहा है।

### शिव की पूजा :

निष्ठावान भक्त इस पूरे महीने में निष्ठा के साथ प्रति नित्य पुण्य नदी का स्नान करते हुए, दिन में अपक्व आहार यानी बिना पकाये आहार दूध, फल आदि लेते हुए संध्या के समय दीप प्रज्चलन करके अन्न पकाकर भगवान को नैवेद्य चढाकर उसे प्रसाद के रूप में लेते हैं। इस रूप में नित्य प्रतिदिन आचरण करते हैं। यह विश्वास है कि प्रदोष काल के समय शिव भगवान एक काल में दो रूपों में दिखाई पडते हुए, वाम भाग में पार्वती और दूसरे भाग में अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शन देते हैं। इसलिए इस समय को अधिक महत्व दिया जाता है। इस प्रदोष काल में माई अध्यक्षा बन कर सिंहासन पर आरूढ़ होने पर शिव भगवान तांडव नृत्य करते परवश होते हैं। उस नृत्य को देखने सारे देवतागण वहाँ इकट्ठा होते हैं। उस समय सरस्वती देवी उस तांडव नृत्य के ताल में ताल मिलाती हुई वीणा बजाती है तो ब्रह्म सुर में सुर मिलाते गाते हैं। श्री महालक्ष्मी तब गान करती रहती है तो श्रीहरि मृदंग बजाते हैं। ऐसा विश्वास है। तब इंद्र वेणुनाद करते सभी को मोहित करते रहते हैं। ऐसे प्रदोष काल के समय देव, गंधर्व, सिद्ध, महर्षिगण सभी परमात्मा के इस स्वरूप की पूजा करते रहते हैं। इसलिए प्रदोष काल में शिव की आराधना करने से सारे देवताओं के आशीर्वाद प्राप्त हो जाते हैं। इस के अतिरिक्त अर्धनारीश्वर की आराधना करने से दो और प्रयोजन प्राप्त होते हैं। एक तो काम पर नियंत्रण, दूसरा काल पर नियंत्रण यानी मृत्यु को भी जीतने की शक्ति को प्राप्त करना। इस प्रदोष काल के भगवान के दर्शन से सर्वशुभ तथा सारी बाधाओं से मुक्त हो सकते हैं। साथ ही सर्वसंपदाएँ प्राप्त होती हैं।

### श्रीहरि की पूजा :

इस पवित्र कार्तिक मास में श्रीहरि की पूजा करने से विशेष फल प्राप्त होता है। कार्तिक मास के दौरान ही शुद्ध एकादशी के दिन श्री महाविष्णु अपनी योगनिद्रा से जागते हैं। इसलिए इस दिन को उत्थानैकादशी कहा जाता है। आदिशेष पर आषाड शुद्ध एकादशी के दिन शयन करनेवाले श्रीहरि फिर कार्तिक शुद्ध एकादशी के दिन योग निद्रा से जागते हैं। उसके अगले दिन द्वादशी के दिन तैंतीस करोड देवताओं के साथ श्री महालक्ष्मी समेत होकर श्रीहरि तुलसी धात्रीवन में बसते हैं। इस द्वादशी को ही 'क्षीराब्धि द्वादशी' भी कहा जाता है।

कृतयुग में आज के दिन ही देव-दानवों ने मिलकर क्षीर सागर का मंथन किया था। तब लक्ष्मी क्षीर सागर से प्रकट हुई थी। उसी के प्रतीक के स्वरूप भारतीय स्त्रियाँ तुलसी धात्री के पास दीप जलाकर लक्ष्मी और नारायण की पूजा करती है।

अखंड सौभाग्यवती और सदा सुहागिन होने की स्त्रियाँ मनौती मांगती हैं। इस के अतिरिक्त आज ही के दिन गाँवों में एवं शहरों में लक्ष्मी-नारायण की मूर्तियों का नौका-विहार कराते हैं। यह भी मान्यता है कि कार्तिक पौर्णमी के दिन धान की घास से रस्सी तैयार करके दो खंभों के साथ उसे बांधकर उनको मशाल से तीन बार जलाकर उन के नीचे से शिव-पार्वति की मूर्तियों को पालकी में रखकर उन के नीचे से तीन बार निकाल कर 'ज्वाला तोरण' का आयोजन करते हैं।

इस रूप में कार्तिक मास में हरि-हर दोनों को प्रसन्न करने लिए व्रत, उत्सवों का आयोजन किया जाता है। सूत महर्षि ने नैमिशारण्य में एकत्रित ऋषि-मुनियों को कार्तिक मास में हरि-हर दोनों की उपासना एक साथ करने की इस विशेषता के बारे में बताया।

### कार्तिक स्नान :

कार्तिक मास में नदी स्नान अत्यंत पवित्र समझा जाता है।

*कार्तिकम सकलम मासम*
*नित्यस्नाई जितेंद्रियः।*
*जपन हविष्यभूत शांतः*
*सर्वपापैः प्रमुच्यते।।*

यानी कार्तिक मास में नित्य प्रातःकाल ही नदी स्नान करते हुए, इंद्रियों को नियंत्रण में रखकर, मंत्र जप करते हुए, शांति से रहते हुए यज्ञान्न का सेवन करनेवाले को सकल पापों से मुक्ति प्राप्ति होती है।

### कार्तिक दीप :

कार्तिक मास में दीपाराधना अत्यंत पवित्र एवं पुण्य कार्य माना जाता है।

*दीपं ज्योतिः परब्रह्म*
*दीपं सर्वतमोपहाः*
*दीपेन साध्यते सर्वं*
*संध्या दीपं नमोऽस्तुते।*

इस मंत्र का जप करते हुए संध्या के समय दीप प्रज्वलन करना चाहिए। यानी दीप ज्योति ही परब्रह्म है। दीप सकल तमो गुणों को दूर करता है। दीप से सभी विजयों को प्राप्त कर सकते हैं। हे संध्या दीप तुझे नमस्कार है।

### दीप दान :

कार्तिक मास में चांदी से बने दीप में नित्य प्रज्वलन करके मासांत में उस चांदी के दीप को दान देने से अत्यंत पुण्य प्राप्त होता है।

*दीपदो लभते विद्यां दीपदो लभते श्रुतम।*
*दीपदो लभते आयुः दीपदो लभते दिवम।।*

यानी दीप प्रज्वलन से विद्या, पांडित्य, आयु और अंत में स्वर्ग को भी प्राप्त कर सकते हैं। शिव-केशव का प्रिय मास कार्तिक है। दोनों की उपासना करके भक्त गण अपने कई जन्मों के पापों को दूर करते हैं। विशेष व्रत, उपवास, स्नान, दीपाराधन करके भगवान शिव और भगवान केशव के शुभाशीष प्राप्त करते हैं। यह भी मान्यता है कि कार्तिक मास में व्रत करने से विष्णु सान्निध्य को प्राप्त कर सकते हैं। निम्न श्लोक यही कहता है--

*एवम यः कार्तिक मासे कुरुते भक्ति नम्रभीः।*
*स याति वैष्णवम धाम पुनरावृत्तिवर्जितम।।*

कार्तिक मास में जो कोई भक्ति-विनय-संपन्न होकर व्रत करता है वह विष्णु सान्निध्य को प्राप्त करके पुनःजन्म से मुक्ति पाता है। कार्तिक मास शुक्ल पंचमी के दिन पद्मसरोवर से श्री महालक्ष्मी आविर्भूत हुई है। जिसे पंचमीतीर्थ के रूप में भी माना जाता है। वे ही पद्मावती है, तिरुचानूर में वास करनेवाली वीरलक्ष्मी है। देवाधिदेव श्रीनिवास वक्षःस्थल पर विराजमान व्यूहलक्ष्मी भी हैं।

## दिसंबर 2023

**१०. श्री धन्वन्तरी जयंती**
**१२. तिरुमल श्री बालाजी के उपस्थिति में अध्ययनोत्सव आरंभ**
**१७. धनुर्मास आरंभ**
**१८. सुब्रह्मण्य षष्ठी**
**२३. वैकुंठएकादशी, श्री गीताजयंती**
**२४. श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थ मुक्कोटी**
**२६. श्री दत्तजयंती**
**२७. श्री कपिलतीर्थ मुक्कोटी**
**२८. तिरुमल श्रीहरि के उपस्थिति में संपन्न प्रणयकलह महोत्सव**

कार्तिक माह में दीपावली पर्व के बाद चौथा दिन नागचतुर्थी के रूप में मनाया जाता है। नवंबर 17 को यह बड़े उत्साह से मनाया जाता है। तेलंगाणा, आन्ध्रप्रदेश, उड़िया, महाराष्ट्र एवं अन्य सभी राज्यों में लोग नागचतुर्थी मनाते हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार देवताओं ने, राक्षसों ने मिलकर, क्षीर सागर का मंथन किया। सबसे प्रथम भयंकर हालाहल उत्पन्न हुआ। उस विष को नियंत्रित कर, अपने हथेली में लेकर, भगवान शिव ने पीलिया। इस विष को अपने कण्ठ भाग में ही स्थापित कर दिया। तब से महादेव 'नीलकंठ' के नाम से विख्यात हुए। विष के प्रभाव से सारे जगत् की रक्षा की गजचर्मधारी महादेव ने। इस पवित्र दिन को नागचतुर्थी के रूप में मनाते हैं।

हिंदू संस्कृति में आदिशेष का बड़ा महत्व है। कहते है कि वे पूरे ब्रह्मांड का धारण करते हैं।

विष्णु की शय्या के रूप में भी सेवा करते हैं। प्राचीन काल से नागदेवता की पूजा प्रचलित है। नागचतुर्थी के दिन नाग की शिला प्रतिमाओं का पूजन करने से अनेक प्रयोजन प्राप्त होते हैं।

### संतान प्राप्ति

शिव जी के पुत्र सुब्रह्मण्य को नागरूप में पूजा करने से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। सब कुछ होते हुए भी संतान नहीं होना अपने आप में एक अभिशाप है। नागों की आराधना से इस कमी को पूरा कर सकते हैं।

## रोगनिवारण

दीर्घकालीन रोगों से अगर कोई मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो नागों की पूजा उनके लिए वरदान स्वरूप है।

## विपत्तियों का नाश

जीवन में कई संकट उत्पन्न होते हैं। उनका निवारण करना आम आदमी के लिए असाध्य है। परंतु नागदेवताओं की पूजा से, क्षीराभिषेक के माध्यम से, विपत्तियों का नाश हो जाता है।

## कालसर्पदोष निवारण

राहु एवं केतु के बीच में सारे ग्रह आ जाते हैं। इसको ज्योतिषीय परिभाषा में काल सर्प-दोष कहते हैं। इसके निवारण के लिए नागप्रतिमाओं की पूजा पूर्ण फलदायक है।

## चर्मरोगों का निवारण

विविध प्रकार के कारणों से हमारे शरीर में चर्मरोग उत्पन्न होते हैं। औषध सेवन के साथ-साथ नागों की पूजा करने से त्वचा रोग नष्ट हो जाते हैं।

नागचतुर्थी को तेलुगु में ''नागुल चविती'' कहते हैं। इस दिन मंदिर में नागप्रतिमाओं का अभिषेक होता है। तरह-तरह के मधुर पदार्थों का भोग भी लगता है। तिल से बने हुए लड्डु इत्यादि समर्पित करते हैं।

नागचतुर्थी के बाद नवंबर 18 को नागपंचमी मनाते हैं। तथा नवंबर 19 को नागषष्ठी, स्कंदषष्ठी धूम-धाम से भक्त मनाते हैं। नागों की पूजा करने से नागाभरण शिव प्रसन्न होते हैं। कई सालों से कोई श्राप लगा हुआ हो तो नष्ट हो जाता हैं। भगवान वेंकटेश के दिव्य वाहनों में शेषवाहन भी विख्यात हैं। नागचतुर्थी को नागोपासना करने के माध्यम से हम भगवान बालाजी की कृपा को प्राप्त कर सकते हैं।

## कुंडलिनीशक्ति का प्रतीक

सर्प कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है। मानव के शरीर में मूलाधार चक्र में कुंडलिनी शक्ति विराजमान है। इस शक्ति को जागृत करने से विभिन्न सिद्धियों की प्राप्ति होती है। षट्चक्रों में प्रथम चक्र मूलाधार है। यह गुदा के पास विद्यमान है। मूलाधार से सहस्रार तक की यात्रा करना बड़ी आध्यात्मिक उपलब्धि है। नागोपासना से कुंडलिनी शक्ति को जागृत करने का मार्ग भी प्रशस्त हो जाता है। नागचतुर्थी के अवसर पर सर्प सूक्त का पाठ करने से पितृदोष दूर हो जाता है। पाठकों के उपयोगार्थ सर्प सूक्तम् स्तोत्र निम्नलिखित है -

### श्री सर्प सूक्तम् स्तोत्र

1) ब्रह्मलोकेषु ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमाः।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

2) इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः वासुकि प्रमुखाद्यः।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

3) कद्रवेयश्च ये सर्पाः मातृभक्ति परायणा।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

4) इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः तक्षका प्रमुखाद्यः।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

5) सत्यलोकेषु ये सर्पाः वासुकिना च रक्षिता।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

6) मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटक प्रमुखाद्यः।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

7) पृथिव्यां चैव ये सर्पाः ये साकेत वासिता।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

8) सर्वग्रामेषु ये सर्पाः वसंतिषु संचिता।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

9) ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पप्रचरन्ति।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

10) समुद्रतीरे ये सर्पाये सर्पाजलवासिनः।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

11) रसातलेषु ये सर्पाः अनन्तादि महाबलाः।
नमोस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीतो मम सर्वदा।।

।। इति श्री सर्प सूक्तम् स्तोत्र ।।

इस प्रकार नाग चतुर्थी के दिन उपर्युक्त सर्पसूक्त का पाठ करने से भौतिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। कर्नाटक में प्रसिद्ध कुक्किसुब्रह्मण्य क्षेत्र का संदर्शन करने से नागशापों की निवृत्ति होती हैं। वहाँ पर नागप्रतिष्ठा, सर्पसंस्कार इत्यादि किये जाते हैं।

नागचतुर्थी के दिन स्नान कर, शुभ्र वस्त्र धारण कर, नाग पूजा करने से, सभी मनोरथ सफल हो जाते हैं। इस में कोई संदेह नहीं।

भक्तगणों का आद्य कर्तव्य है कि वे नाग चतुर्थी के शुभ अवसर पर नागों की पूजा करें।

**तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।**

## लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

**प्रधान संपादक,**
**सप्तगिरि कार्यालय,**
**ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,**
**तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।**

# क्षीराब्धि द्वादशी का प्राशस्त्य

- श्रीमती वी.केदारम्मा

*''मासानां कार्तीकः श्रेष्ठः।''*

त्रिगुणातीत ईश्वर का चैतन्य शिवात्मक नारायणात्मक हो विश्वभर में व्याप्त होकर अत्यन्त शुभप्रद हो भासित होता है कार्तिक मास में ही। कृत्तिका नक्षत्र युक्त पूर्णिमा कार्तिक मास में ही आती है। कृत्तिका नक्षत्र का अधिदेवता अग्नि है। अग्नि तत्वात्मक कार्तिक मास शरद ऋतु का दूसरा मास है। शिव-केशव व जगन्माता का प्रिय मास है यह। हरि-हरात्मक हो भक्ति परिमल-भरित इस मास में कार्तिक दामोदर स्मरण, धूप, दीप, नैवेद्यों, अपूर्व सजावटों, विशिष्ट दीपालंकरणों से विष्णु भगवान के देवालय दीप्तिमान हो दिखते हैं। इसी प्रकार शिवालयों में आशुतोष, अभिषेकप्रिय, मंगलदायक शिव की प्रति नित्य प्रातःकाल से लेकर रात तक तरह-तरह के अभिषेकों, पूजा-अर्चनाओं नैवेद्यों के अर्पणों से सेवाएँ संपन्न होती हैं।

इस मास में किये जानेवाले प्रत्येक कार्य में आध्यात्मिक भाव, भक्ति तत्परता, अनिर्वचनीय आनंद द्योतक होता हैं।

*''हृदि दामोदरं ध्यात्वा इमं मंत्रं ततोवदेत्।*
*कार्तीकेहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दनं।।''*

तडके ही, नक्षत्रों के रहते समय, बहने वाली नदी के जल में स्नान करके भक्त जन, सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इससे शरीर एवं मन पवित्र बन जाते हैं। अलक्ष्मी का नाश होता है। अनायास ही भक्त, दामोदर नाम स्मरण, शिव नाम स्मरण करते हैं। कार्तिक मास का प्रत्येक दिन पवित्र दिन ही है। पंचकोशान्तरस्थित हो, अणुरूप में स्थिर प्रकाशित होने वाले परमेश्वर की कांति को ढूँढते अंतर्मुखी हो प्रयाण करने का संकेत ही दीप प्रज्वलन है।

तिमिरांधकार का विनाश करने वाला दीप परब्रह्म स्वरूप है। एक, दो, दसों, सैकडों, हजारों, लाखों, करोडों की संख्या में भक्त लोग, मंदिरों, गृह-प्रांगणों, पवित्रस्थलों में दीप जलाया करते हैं। उस दीप कांति में अपने इष्टदैव का दर्शन करना, सब की इच्छा होती है। कार्तिक में किया जानेवाला, प्रत्येक कार्य हरिहरार्पण होता है। मुख्य रूप से धन-दान, धान्य-दान, शाकदान, भूदान, गोदान, सुवर्णदान, रजतदान, वस्त्रदान सभी विशेष फल देने वाले ही हैं। अपने घर में कन्यादान करने को गृहस्थ अपना उत्तम भाग्य मानता है। गरीब परिवार को, विवाह के अवसर पर धन, वस्तु, आभरणों के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान करने से पुण्य फल प्राप्त होता है, ऐसी आर्योक्ति है।

कार्तिक मास में आनेवाले सारे सोमवार, शुक्ल पक्ष के एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा इत्यादि पर्वदिनों के रूप में परिगणित हो रहे हैं। कार्तिक सोमवारों का अधिपति चंद्र है। सोमवार के दिन उपवास-व्रत रखना

और चंद्रमौलीश्वर का अभिषेक पंचामृतों, विविध फलों के रसों से करने पर विशेष फल प्राप्त होता है, ऐसा कहा जाता है। इसी प्रकार उपवास रहकर, सायं समय ईश्वराराधना करके, नक्षत्र दर्शन के पश्चात् भोजन करने की पद्धति भी अमल में है। इस तरह नियमबद्ध संप्रदाय का आचरण करने को नक्त रहना कहते हैं। अनेकों भक्त संप्रदाय का आचरण करते हैं।

कार्तिक मास में पहले आनेवाले शुक्ल पक्ष की एकादशी को 'हरिबोधिनैकादशी', 'प्रबोधनैकादशी', 'उत्थानैकादशी' जैसे विविध नामों से पुकारा करते हैं। आषाढ शुक्ल एकादशी के दिन शेष-शय्या पर नींद के लिए उपक्रमण करनेवाले श्री महाविष्णु कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन जागते हैं, ऐसी प्रतीति है। आषाढ शुक्ल एकादशी को 'शयनैकादशी' कहते हैं। कार्तिक मास में आनेवाली एकादशी के दिन प्रशांत चित्त से भक्ति व श्रद्धा के साथ उपवास रहकर विष्णु की आराधना करनी चाहिए। श्री विष्णु सहस्रनाम पारायण, पुराण-श्रवण, विष्णु पादार्चन, सेवन आदि को ध्येय बनाकर अहोरात्र भक्त लोग भगवत्स्मरण करते हैं।

इसके अगले दिन आनेवाली द्वादशी को 'क्षीराब्धि द्वादशी', 'हरिबोधन द्वादशी' कहते हैं। यह द्वादशी परम पवित्र है। कृतयुग में अमृत के लिए देव-दानवों ने क्षीर सागर का मंथन किया।

उस क्षीर सागर मंथन में पहले अग्निज्वाला युक्त भयानक हालाहल पैदा हुआ। भगवान शंकर ने उस गरल का पान किया। इससे लोक का कल्याण हुआ। इसके पश्चात् क्षीर सागर से कल्पवृक्ष, कामधेनु, उच्चैश्रव, ऐरावत, धन्वंतरी, उप्सरस स्त्रियाँ, षोडश कलाप्रपूर्ण चंद्र का उद्भव हुआ। अंत में विद्युल्लता की भाँति, क्षीर सागर

पर रहने वाली मलाई की तरह, प्रातःकाल के समय लाल कमलों से भरे सरोवर में व्याप्त सुगंध की नाई, सुनहले चंपक माला की सुंदरता की भाँति, बाल चंद्र की शीतल कान्ति के समान वाली श्री लक्ष्मी देवी का आविर्भाव हुआ। सुंदरता की राशि, नित्य सौभाग्यवती, षोडश कलाप्रपूर्णा श्री महालक्ष्मी से श्री महाविष्णु ने विवाह कर लिया। तीनों लोकों के लोगों ने श्री लक्ष्मीनारायण का विवाह जीभर देखा। यह कल्याण लोक प्रसिद्ध बन गया। क्षीराब्धि द्वादशी के दिन तुलसी के बृंदावन में भक्त लोग श्री लक्ष्मी-नारायण का कल्याण धूमधाम से संपन्न करते हैं। बृंदावन, तुलसी वृक्ष संशोभित होता है।

*गंगादयादि सरितः श्रेष्ठः*
*विष्णु ब्रह्म महेश्वराः।*
*देवैस्थीर्तैः पुष्कराद्यैः*
*तिष्टन्ति तुलसी दले।।*

सर्व देवताओं का निलय है तुलसी का पौधा। तुलसी दल पवित्र दल है। तीन करोड नदियाँ और देवता लोग तुलसी दल में विद्यमान हो रहते हैं। प्रत्येक गृहिणी अपने घर में तुलसी के पौधे को पालती है। प्रतिनित्य सुबह पूजा-अर्चनाओं, प्रदक्षिणा नमस्कारों से सेवन करती है। पवित्र तुलसी दल से रुक्मिणी देवी ने श्रीकृष्ण परमात्मा को तौल दिया। इससे सत्यभामा का गर्व भंग हुआ; यह हम सबको ज्ञात ही है।

तुलसी साक्षात् लक्ष्मी देवी का प्रतिरूप है। क्षीराब्धि द्वादशी के दिन श्री महाविष्णु, श्री लक्ष्मीदेवी सहित समस्त देवताओं के समूह के

साथ तुलसी-बृंदावन पधारते हैं, ऐसा शास्त्रवचन है। इस द्वादशी के दिन आँवले से युक्त शाखा को तुलसी वन में रखकर, सायंकाल को पूजा करने का आचार अमल में है। इसी तरह (365) बत्तियों से ज्योति का प्रज्वलन भी किया जाता है। किसी कारण वश वर्ष भर में यदि दीपाराधन न करे तो जो दोष लगता है, वह इस दिन (365) बत्तियाँ एक ही बार जलाने पर दूर हो जाता है, ऐसा भक्तों का विश्वास है।

उसी दिन जो सोने से बनाये गये तुलसी-पौधे को दान करने के साथ-साथ सालग्राम का दान शक्त्यानुसार करता है, उसे सप्त समुद्रों के बीच की भूमि का दान करने का फल मिलता है, ऐसा पुराण वचन है। एकादशी के दिन उपवास रहने की जितनी प्राधान्यता है, द्वादशी के दिन समय पर पारण करना भी अति मुख्य है, ऐसा शास्त्र बता रहे हैं। उदाहरण के लिए अंबरीषोपाख्यान को ले सकते हैं।

घर के आवरण में आँवले के वृक्ष को पालना बडे भाग्य की बात है। इसी, प्रकार आँवले के फलों को समय पर विविध रूपों में सुरक्षित रख लेना श्रेष्ठ कार्य है, ऐसा बुजुर्गों का कथन है। जहाँ आँवले का वृक्ष व आँवले के फल रहते हैं, वहाँ लक्ष्मी की प्रसन्नता अवश्य बनी रहती है, गरीब परिवार की गृहिणी के यहाँ से आँवले के फल को भिक्षा के रूप में स्वीकार करके श्री शंकर भगवद्पाद ने कनकधारा का स्तवन करके उसके घर के प्रांगण में सोने के आँवलों की वर्षा करना इसका एक सुंदर उदाहरण है। आँवले के फल के ऊपर कुंभ बत्ती जलाकर तुलसी के सामने पूजा करना, आँवले की शाखा को तुलसी-पौधे के मूल में रखना क्षीराब्धि द्वादशी की विशिष्टता है।

महा काल स्वरूप में लाखों, करोडों वर्ष बीत गये। और अनेकों वर्ष बीतने वाले हैं। इस काल स्वरूप को दैवत्व आपादित करके विविध ऋतुओं, महीनों, तिथियों से संबंधित देवताओं की आराधना करने का आचार अनादि काल से चला आ रहा है।

त्रिकरण शुद्धि से की जाने वाली पूजा में भक्ति परिमल छिपा हुआ रहता है। जिस प्रकार सारी नदियाँ समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार सारे देवताओं से संबंधित दिव्य पूजा कुसुम उस परमेश्वर के सन्निधान में पहुँच जाते हैं। चाहे, कौन-सा भी काल क्यों न हो, हमारे द्वारा संपन्न पूजाएँ, व्रत, नोम सब कुछ ईश्वर को ही अर्पित होते हैं। मुख्य रूप से कार्तिक मास में किये जाने वाले सारे पुण्य कार्य शिव-केशवों की प्रसन्नता के लिए ही हैं।

अंत में करोडों, करोडों भक्तों की विनतियाँ, इच्छाएँ, अभ्यर्थनाएँ सभी भगवान की सन्निधि में पहुँचती हैं, भगवान सभी का सुनता है, सब की आर्तियाँ सुनता है, सबके अंतरंग जानता है।

करुणासागर भगवान की दया अपार है। भक्त की इच्छा चाहे ऐहिक हो अथवा आमुष्मिक अंतरंग जानकर पूरा करता है भगवान। सारी इच्छाओं की अपेक्षा उत्तम इच्छा भगवद् चरणारविंद साक्षात्कार है। वह पुनरावृति रहित पद है। उन दो दुर्लभ फलों की इच्छा करना, गलत नहीं है। भक्ति व श्रद्धा के साथ साधना करने पर फल की प्राप्ति अवश्य होती है। यदि मनो संकल्प तीव्र हो, विशिष्ट हो, तो फल करतलामलक ही है।

# श्री पशुपतिनाथ मंदिर, नेपाल

- श्री डी.राजकुमार

पशुपतिनाथ मंदिर नेपाल देश की राजधानी काठमांडू के पूर्वोत्तर दिशा में बागमती नदी के किनारे स्थित है। इस दिव्य धाम में पशुपतिनाथ के नाम से पूजित परम दयालु भोलेनाथ आदिदेव भगवान शिवशंकर दर्शन देकर देवताओं और मानवों पर अपनी कृपा की वर्षा करते हुए उन्हें कृतार्थ करते हैं। समस्त विश्व में पवित्रतम शिवधाम है यह पशुपतिनाथ का पावन मंदिर।

भारत और नेपाल के लाखों श्रद्धालु यहाँ अखंड आस्था एवं विश्वास के साथ दर्शन करने आते हैं तथा इस महिमामंडित मूर्ति स्वरूप आदिदेव के पवित्र भस्म को मस्तक पर लगाकर परम आत्मीय आनंद की अनुभूति करते हैं।

पशुपतिनाथ मंदिर अत्यधिक विशाल है। मंदिर के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही भगवान शिव के गण, वाहन तथा उनकी सेवा में सदैव तत्पर नंदी की स्वर्णजटित प्रतिमा के दर्शन होते हैं। शिवालय का मुख्य मंदिर बृहत आकार का तथा बहुत ही ऊँचा है।

इस मंदिर का गर्भगृह चतुर्भुज आकार में है जिसके चहुँओर चार द्वार हैं। मध्य में स्थित शिवलिंग के चारों तरफ चार मुख हैं जिन्हें धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का प्रतीक माना जाता है। भक्तगण इस चतुर्मुख लिंग स्वरूप पशुपतिनाथ की अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ आराधना करते हैं। कुछ भक्त इस शिवलिंग के ऊर्ध्व मुख के साथ इसकी पंचमुखी शिवलिंग के रूप में पूजा करते हैं। भक्तों का एक वर्ग इस पवित्र शिवलिंग के निचले भाग में एक मुख मानकर इसे षण्मुखी अथवा छह मुखों वाला शिवलिंग मानते हैं।

गर्भगृह के चारों दिशाओं में स्थित चार द्वारों के बाहर से दिव्य पावन शिवलिंग के दर्शन किये जा सकते हैं। यहाँ के पुजारियों को पंडित कहा जाता है। चार पुजारियों द्वारा पशुपतिनाथ की पूजा-अर्चना की जाती है।

ये पंडित, भक्तों द्वारा चढ़ाई गई पूजा सामग्री लेकर भगवान को समर्पित करने के उपरांत उन्हें प्रदान करते

हैं। केवल इन चार पुजारियों को ही पशुपतिनाथ के पवित्र शिवलिंग को स्पर्श करने का अधिकार है, यह परम दुर्लभ सौभाग्य भारतीय पुजारियों को ही प्राप्त होना हमारे लिए आह्लादकारक है। इस संदर्भ में एक सर्वमान्य कथा प्रचलित है-

''नेपाल के लोकप्रिय महाराजा के मृत्यु के उपरांत शोक संतप्त देश में भगवान पशुपतिनाथ की नित्य पूजा अर्चना संभव नहीं हो पा रही थी, अतः नित्य अभिषेक एवं अनुष्ठान में आए व्यवधान को दूर करने के लिए भगवत्पाद श्री शंकराचार्य जी ने भारत देश से पुजारियों को लाकर पशुपतिनाथ के निर्बाध पूजन की व्यवस्था की थी।''

उस समय से आजतक पशुपतिनाथ की पूजा का सौभाग्य दक्षिण भारत के अर्चकों को ही प्राप्त है। श्री आदिशंकराचार्य ने ही यहाँ होने वाले पशुबलि की प्रथा को समाप्त करवाया था। इस पवित्र तीर्थ से संबंधित गाय और हिरण की कई कथाएँ प्रचलित हैं।

पशुपतिनाथ मंदिर की स्थापत्य कला अत्यधिक सुंदर और दर्शनीय है।

एकादशी, संक्रांति, नागपंचमी, रक्षा बंधन और ग्रहण एवं कुछ अन्य अवसरों पर यहाँ विशेष पूजा, आराधना की जाती है। यहाँ का पूजा विधान पूर्णतः शास्त्रोक्त रीति से संपन्न होता है। सभी भक्तों को बिना किसी भेदभाव के पशुपतिनाथ के दिव्य शिवलिंग के दर्शन होते हैं।

दर्शन के उपरांत हम ब्रह्म, चंडीकेश्वर, धर्मशील, गोकर्णनाथ, आर्या, विश्वरूप, गुह्येश्वर, गौरी, कार्तिकेश्वर तथा अन्य देवताओं के मंदिरों को भी दर्शन कर सकते हैं जो मुख्य मंदिर के परिसर में निर्मित हैं। प्रधान मंदिर के दक्षिण की ओर नेपाल के गत शासक महाराजाओं के वंशजों की स्वर्ण प्रतिमाओं की स्थापना की गई है।

पशुपतिनाथ मंदिर का प्रमुख त्योहार 'शिवरात्रि' है। महाशिवरात्रि पर्व के दिन यह पावन धाम घी के दियों के प्रकाश में शोभायमान होता है। इस शिवालय के पीछे बागमती नदी बहती है, यहीं बहुत बड़ा शमशान है। इस शमशान में भगवान शिव से एकाकार हुए शिवभक्तों का अंतिम संस्कार किया जाता है।

मंदिर प्रांगण के पवित्र वातावरण में कई पंडित शास्त्र विधि से भक्तों द्वारा पूजा, व्रत आदि करवाते रहते हैं।

यहाँ रुद्राक्ष बहुतायत में मिलते हैं। मंदिर के निकट खरीदे गए रुद्राक्ष को अति पवित्र माना जाता है। पूजा सामग्री के साथ रुद्राक्ष माला भी पुजारी को दी जाती है, इन रुद्राक्ष मालाओं से पुजारी विधिपूर्वक महादेव को अलंकृत करके उनका अभिषेक करने के पश्चात पवित्र भस्म के साथ भक्तों को देते हैं, इसे देवाधिदेव पशुपतिनाथ के दिव्य प्रसाद में स्वीकार करके भक्त, भाव विभोर हो जाते हैं। मंदिर के आसपास स्थित कई दुकानों में मोती, नवरत्न, विभिन्न प्रकार

की जप-तप मालाओं के अतिरिक्त अन्य पूजा सामग्री बेची जाती हैं।

विदेशी यात्री भी पशुपतिनाथ के दर्शनार्थ आते रहते हैं। काठमांडू में नेपाल का एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा 'त्रिभुवन हवाई अड्डा' है, यह विश्व के तीस देशों के हवाई सेवाओं से जुडा हुआ है, इसके द्वारा विश्व के कोने-कोने से श्रद्धालु काठमांडू पहुँचकर भगवान पशुपतिनाथ का पावन दर्शन लाभ प्राप्त करते हैं।

**हवाई मार्ग :** भारत के लगभग सभी प्रमुख शहरों से काठमांडू के लिये सीधी हवाई सेवायें उपलब्ध हैं।

**सड़क मार्ग :** यद्यपि हमारे देश से नेपाल आवागमन के लिए दो-तीन सड़क मार्ग हैं पर सुनौली सीमा मार्ग अधिक विकसित तथा सुविधाजनक सड़क मार्ग है। भारत के गोरखपुर और वाराणसी से नेपाल देश की सीमा सुनौली पहुँच कर वहाँ से बस अथवा प्रइवेट वाहनों द्वारा काठमांडू पहुँचा जा सकता है।

सुनौली से स्थानीय बसों द्वारा भी काठमांडू पहुँचा जा सकता है। सुनौली से काठमांडू की दूरी लगभग 275 किलोमीटर है। घाट रोड होने के कारण इस यात्रा में 8 घंटे भी लग सकते हैं। हाल ही हमारे देश की राजधानी दिल्ली से काठमांडू तक बस सेवायें प्रारंभ की गई हैं, इस यात्रा में 30 घंटे का समय लगता है।

**रेल यात्रा :** अभी तक काठमांडू के लिये रेल मार्ग नहीं है परंतु भारत के जयनगर से नेपाल के जनकपुर तक रेल सेवा उपलब्ध है। जनकपुर से काठमांडू की यात्रा में 6 घंटे लगते हैं। नेपाल के लोगों का मानना है कि भगवान पशुपतिनाथ की कृपा के बिना नेपाल का अस्तित्व ही नहीं है।

**देवाधिदेव महादेव पशुपतिनाथ की जय!**

## तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

**स्वामिपुष्करिणी :** मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

**आकाश गंगा :** मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**पापविनाशनम् :** मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**वैकुंठ तीर्थ :** मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**तुम्बुरु तीर्थ :** मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) :** यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**ति.ति.दे. बगीचे :** देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

**आस्थान मंडप (सदस हाल) :** यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

**श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) :** इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

**ध्यान केंद्र :** तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

आयुर्वेद

# केले के स्वास्थ्य लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

भारत में केले संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। भगवान विष्णु ने फल के बारे में घोषणा की, ''जैसे कदली वृक्ष की छल और पत्तियाँ उसके तने में देखी जा सकती हैं, वैसे ही आप ब्रह्माण्ड और सभी चीजों के तने हैं जो आपको दिखाई देती हैं।'' आज भी शिव और विष्णु के अनुयायी केले के पौधे को शुभ मानते हैं। भारतीय विवाह में भाग लेने पर, कोई भी मञ्च के पास प्रजनन क्षमता का प्रतीक केले का डंठल देख सकता है और उसके बाद बेटे की इच्छा रखनेवाली महिलाएँ कार्तिक महीने के दौरान पौधे की पूजा कर सकती हैं।

अधिकांश केले की खेती जो की जाती है, उनका नाम है Musa acuminata, Musa Balbisiana, Musa Paradisiaca और Musa Sapientum. अब Musa Sapientum का उपयोग ज्यादा नहीं किया जाता है। यह Musaceae परिवार से संबंधित है।

आयुर्वेद के अनुसार केला वात दोष और पित्त दोष को संतुलित करता है लेकिन कफ दोष को बढ़ाता है। इस पौधे को संस्कृत में 'कदली' के नाम से और फल को ''कदली फल'' के नाम से जाना जाता है। दक्षिण भारतीय व्यञ्जनों में फलों, तनों और फूलों का नियमित रूप से उपयोग किया जाता है। यह सबसे बडा शाकाहारी फूलवाला पौधा है। यह पौधा 6 से 7.5 मीटर तक ऊँचा होता है। यह जडी बूटी ''मूसा'' प्रजाति से संबंधित है। पौधें में मुलायम छद्म तना और सर्पिल रूप से व्यवस्थित लंबी पत्तियाँ होती हैं। पत्तियाँ 2.5 मीटर लम्बी और $^1/_2$ मीटर चौडी हो सकती हैं। केले में मधुर रस या मीठा स्वाद होता है। यह शीतवीर्य और पचने में भारी (गुरु) है। यह ऊतकों की नमी को बढ़ाता है।

## कच्चे केले के लाभ

कच्चा केला खनिज, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट का भण्डार है। इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन, जिंक आदि होते हैं। विटामिन ए, बी, सी, बी-6 आदि भी भरपूर मात्रा में मिलते हैं। पोटेशियम उच्च-रक्तचाप को कम करने में मदद करता है। उच्च-रक्तचाप और स्तम्भन दोष के बीच एक मजबूत संबंध है। जैसे पोटेशियम उच्च-रक्तचाप को कम करने में मदद करता है, वैसे ही यह स्तम्भन दोष में भी मदद करता है। अध्ययनों से पता चला है कि शुक्राणु गतिशीलता के लिए कैल्शियम की अवश्यकता होती है। यह हरे रंग का फल पुरुषों के लिए उनके यौन जीवन को स्वस्थ और सक्रिय रखने के लिए एक आदर्श भोजन है।

## केले के पत्ते के लाभ

केले के पत्ते का उपयोग कटने, जलने और छाले जैसे छावों पर ड्रेसिंग के रूप में किया जा सकता है। जले हुए केले के पत्तों को शहद के साथ मिलाकर खाने से लगातार आनेवाली हिचकी बंद हो सकती है। हालांकि, इस दावे का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। इसे आजमाने से पहले डाक्टर की सलाह लें। सूरज की रोशनी से बचने के लिए सनस्क्रीन जेल बनाने के लिए केले के पत्ते का अर्क एक उपयुक्त घटक हो सकता है।

कुछ ग्रामीण पेट ढ़कने के लिए केले के कोमल पत्तों को सरसों के तेल के साथ मिलाकर उपयोग करते हैं, जिससे दस्त से राहत मिल सकती है। एक पशु अध्ययन से पता चला है कि केले के पत्तों में मधुमेहविरोधी गुण हो सकते हैं। ताजा केले के पत्ते का रस सोरायसिस से पीडित लोगों को राहत दे सकता है। सुबह नियमित रूप से केले के पत्ते का रस पीने से खांसी और सर्दी कम हो सकती है। आंखों में संक्रमण होने पर केले के पत्तों का एक टुकडा आंखों के लिए छाया के रूप में प्रयोग किया जा सकता है - यह आंखों को सुखदत्ता प्रदान कर सकता है।

### केले के फल के स्वास्थ्य लाभ

त्वचा पर केले का पेस्ट लगाने से शुष्क त्वचा, मुँहासे और सुर्रियों जैसी त्वचा की समस्याओं के प्रबंधन के लिए फायदेमन्द है। यह बालों को पोषण देने और बालों के विकास को बढ़ावा देने में भी मदद करता है। केले के नियमित सेवन से तंत्रिका तंत्र को शान्त करने में मदद मिलती है अनिद्रा और तनाव कम होता है। एक अध्ययन से पता चला है कि चूहों को पके केले का जलीय अर्क देने से कैंसर कोशिकाओं में कमी आई है।

केले में ग्लाइसेमिक इण्डेक्स कम होता है, इसीलिए मधुमेह में दे सकते हैं। हालाँकी इस दिशा में अधिक अध्ययन की जरूरत है। एक अध्ययन से पता चला है की केला खाने से लिवर की कार्यक्षमता में सुधार आ सकता है। केले में फाइबर, मैग्नीशियम और पोटेशियम भरपूर होता है जो उच्च-रक्तचाप में लाभ पहुँचाते हैं। उच्च आयरन और फोलेट सामग्री के कारण, केला एनीमिया को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है। केले एंटी ऑक्सीडेंट, ल्यूटिन, विटामिन-ए और कैरोटीनॉयड से भरपूर होते हैं जो दृष्टि में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

### केले के फूल के स्वास्थ्य लाभ

केले का फूल प्राकृतिक तरीके से संक्रमण का इलाज करने में काफी कारगर साबित होता है। पके हुए केले के फूल मासिक धर्म के दौरान उठनेवाले पेट दर्द से निपटने में मदद कर सकते हैं और रक्तस्राव को कम कर सकते हैं। दही के साथ सेवन करने से ये फूल शरीर में प्रोजेस्टेरोन हार्मोन को बढ़ाते हैं और रक्रस्राव को कम करते हैं। केले का फूल स्तनपान करानेवाली माताओं के लिए स्तन के दूधस्राव को बढ़ाता है। यह गर्भाशय को सहारा देने में भी मदद करता है। और प्रसव के बाद रक्तस्राव को कम करता है। केले के फूल में बालों को बाहरी तनावों से बचाने और बालों की मोटाई और बनावट में सुधार करके ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करने की क्षमता होती है। केले के फल के साथ केले के फूलों का मिश्रण अच्छा काम करता है और उम्र बढ़ने के लक्षणों को धीमा करने में भी मदद कर सकता है।

### केले के तने के स्वास्थ्य लाभ

केले के तने में उच्च मात्रा में फाइबर होता है, लंबे समय तक पेट भरा रखता है, वजन घटाने की यात्रा में मदद करता है। चूंकि केले के तने में फाइबर अधिक होता है, इसलिए बिना छाने इसका रस पीने से कब्ज में राहत मिलती है। केले का तना शरीर से हानिकारक विषाक्त, पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। गुर्दे की पथरी को रोकने के लिए केले के तने के रस की सिफारिश की जाती है। तने में मौजूद पोटेशियम सामग्री गुर्दे में कौल्शियम क्रिस्टल या कैल्शियम गाण्ठ निर्माण को रोकती है। अधिकतम लाभ के लिए इसे इलायची पाउडर के साथ लेने की सलाह दी जाती है। केले के तने में विटामिन बी-6 और पोटेशियम गुण होते हैं, जो रक्तचाप को नियंत्रित करने और कोलेस्ट्रॉल का इलाज करने में मदद करते हैं। केले के तने में मौजूद पोटेशियम, विटामिन बी-6 और मूत्रवर्धक गुण मूत्रपथ से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने और मूत्रसंक्रमण को रोकने में मदद करते हैं।

### केले के अधिक सेवन के दुष्प्रभाव

अधिक खाने से वजन बढ़ सकता है। इसमें ज्यादा फाइबर होने से, अधिक खाने से पाचन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। इसमें Tryptophan रहता है, जिससे नीन्द अधिक आती है। केले में प्राकृतिक चीनी सामग्री रहती है जो दांतों के लिए सही नहीं है। कुछ लोगों को इससे अलर्जी रहती है, वैसे लोग इसे ना खाएँ!

**''स्वस्थ रहें और सुख से रहें।''**

# आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.सूर्यनारायण
अनुवाद - श्री अवधेष कुमार शर्मा

## त्रिंशः पाठः - तीसवाँ पाठ

मया = मेरे द्वारा / से
अस्माभिः = हमारे द्वारा / से
त्वया = तेरे तुम्हारे द्वारा / से

इतः पूर्वम् = इससे पहल
इतः परम् = इसके बाद
इति = ऐसा / समाप्त

पश्यति = देखता रहा है।
द्रक्ष्यति = देखेगा
दर्शयति = देखाता हैं।

**प्रश्न : (अ)**

1. यूयं मया आगच्छत्।
2. वृक्षे फलानि न सन्ति।
3. सर्वाणि फलानि अपतन्।
4. तत्र गोविन्दः अस्ति किं वा? पश्य।
5. मम मञ्चं दर्शय।
6. तव जनकः श्वः अस्माभिः आगमिष्यति।
7. पाकः कथमस्ति न द्रक्ष्यसि किम्?
8. झटिति पाकं कुरुत। इति वद।
9. एतत् क्षीरं पातुं सम्यक् नास्ति।
10. एतत्क्षीरे लवणम् अपतत्।

**जवाब : (अ)**

1. तुम सब मेरे साथ आओ।
2. वृक्ष पर फल नहीं हैं।
3. सभी फल गिर चुकें है।
4. वहाँ पर गोविंद है क्या देखो?
5. मेरी चारपाई को दिखाओ।
6. तुम्हारे पिता कल हमारे साथ आयेंगे।
7. भोजन कैसा है नही दिखाओंगे क्या तुम
8. जल्दी से भोजन बनाऐ ऐसा बोलो।
9. ये दूध पीने योग्य नहीं है।
10. इस दूध में नमक गिर गया है।

**प्रश्न : (आ)**

1. इस बालक के घर को मुझे दिखाओ।
2. वह तेरे (तुम्हारे) घर क्यों गया था।
3. कुछ दूर जाओ।
4. कल हमारी चारपाई को तुम्हारे घर में देखी थी।
5. तो क्या हमारे साथ आओगे क्या?
6. मैं आउंगी तो यहाँ मेरे घर को कौन देखेंगे?
7. तुम्हारी छोटी बहन घर में है न।
8. वे सब पहाड़ो पर चलते है।
9. तुम वहाँ पर क्यों जा रहे हो?
10. चुप ही रहों।

**जवाब : (आ)**

1. एतस्य बालकस्य गृहं मम दर्शय।
2. सः तव गृहं किमर्थं गतवान्। (अगच्छत्)
3. किञ्चित् दूरं गच्छ।
4. ह्यः अस्माकं मञ्चं युष्माकं गृहे अहं अपश्यम्।
5. तर्हिः अस्माभिः सह आगच्छति किम्?
6. अहम् आगमिष्यामि चेत् अत्र मम गृहं के पश्यन्ति?
7. तव अनुजा गृहे अस्ति खलु।
8. ते पर्वतेषु चलन्ति।
9. त्वं तत्र किमर्थं गच्छसि?
10. तुष्णीमेव भव।

# नवम्बर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

**मेष राशि -** ग्रह परिवर्तन होने के कारण यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पारिवारिक उत्तरदायित्व में कठिनाई। रोजी-रोजगार, उद्योग-धन्धों की चिन्ता। आर्थिक परेशानी, अपनों का असहयोग। प्रियजनों से कष्ट जिससे मन खिन्न रहेगा।

**वृषभ राशि -** शरीर अस्वस्थ रहेगा तो भी आप किसी भी कार्यों से पीछे नहिं हटेंगे। गृह-भूमि-कृषि कार्यों में प्रगति। आर्थिक उथल-पुथल, सामाजिक लोगों के सम्पर्क से लाभ मिलेगा। शैक्षणिक अभिरुचि बढ़ेगी। पारिवारिक उलझनें। अपनों का असहयोग।

**मिथुन राशि -** व्यावसायिक कार्यों में अवरोध उत्पन्न होंगे। सामयिक कार्यों में सीमित सफलता, संतान पक्ष की चिंता बनी रहेगी। पारिवारिक सुख प्राप्त होंगे। श्रेष्ठजनों का समागम जिससे पद-प्रतिष्ठा-मान-सम्मान प्राप्त होंगे। व्यापारिक क्षेत्रों में लाभ, शुभ संवाद से मनोबल में वृद्धि। मित्रों का सहयोग, अपनों का साथ बना रहेगा।

**कर्कटक राशि -** आपके ऊपर शनि की ढैया का प्रभाव चल रहा है। चिंता न करें शनि मार्गी होकर आपको पूर्ण सफलता प्रदान करेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, हृदय रोगियों के लिए कष्टप्रद रहेगा। आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी। संतान सुख प्राप्त होंगे। ज्ञान-प्रतिष्ठा-यश में वृद्धि।

**सिंह राशि -** यह मास आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। मन में साहस-पराक्रम, पौरुष शक्ति भरपूर बना रहेगा। सुव्यवस्थित दिनचर्या होने के कारण आरोग्य सुख उत्तम रहेगा, विद्या-बुद्धि क्लेश का निवारण होगा। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। नौकरी-पेशा में हर्ष एवं उल्लास बना रहेगा। व्यापार क्षेत्रों से पूर्ण लाभ। शत्रुपक्ष कमजोर होंगे।

**कन्या राशि -** केतु गोचर होने के कारण आर्थिक, मानसिक कष्ट बना रहेगा। स्वास्थ्य हानि, दुष्टविचारों का उदय, दुष्प्रवृत्तियों में संलग्नता रहेगी। व्यवहार में कठोरता, कार्यों में अवरोध, रोजी रोजगार की चिंता। गृह कष्ट, प्रवास पीड़ा, शारीरिक पीड़ा, व्यर्थ धन खर्च होगा। व्यापार की स्थिति सामान्य रहेगी। पत्नी कष्ट, पुत्र कलह घर में होता रहेगा।

**तुला राशि -** यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक सिद्ध होगा। प्रशासनिक कार्यों में रुचि, कार्य क्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का शमन, आर्थिक सफलता जिससे मन संतुष्ट रहेगा। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा, नौकरी में उल्लास। राजनीतिक-सामाजिक लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा।

**वृश्चिक राशि -** इस महीने आप शारीरिक और मानसिक कष्ट से चिंतित रहेंगे। निरर्थक बाद-विवाद, उलझनों से परेशानी। व्याकुलता अधिक रहेगी। व्यापार में असंतोषजनक लाभ, आय कम व्यय अधिक। छात्रों के लिए पठन-पाठन में अरुचि होने का कारण असफलता। पदोन्नति। कार्य क्षेत्रों का विस्तार।

**धनुष राशि -** आपके ऊपर बृहस्पति के कृपा होने के कारण यश-मान, पद-प्रतिष्ठाओं में वृद्धि होगी। नौकरी के क्षेत्र में नये-नये अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति मिलेगा। रुका हुआ कार्य चलने लगेगा। धनलाभ, आर्थिक स्थिति मजबूत होंगे। व्यापार में अनुकूलता। निर्माण कार्यों में प्रगति।

**मकर राशि -** आपके लिए यह महीना उत्तम सिद्ध होगा। पारिवारिक सुख-सौहार्द्र, अपने कार्यों के प्रति अभिरुचि, अभिष्ट सिद्धि प्राप्ति, आरोग्य सुख, आर्थिक प्रगति। गृहभूमि-निर्माण में अभिरुचि। व्यापार क्षेत्रों में अभिवृद्धि, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता। राजकीय सहयोग प्राप्त होंगे। सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन। श्रेष्ठजनों का समागम होगा।

**कुंभ राशि -** यह माह आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। काय सुख प्राप्त होंगे। कार्यों में शिथिलता, दैनन्दिन जीवन व्यतीक्रम रहेगा। व्यापार में क्षति, आर्थिक हानि होने से मानसिक व्यथा बना रहेगा। नौकरी सुखद, पारिवारिक सहयोग, मित्रों का सहयोग एवं समागम बना रहेगा।

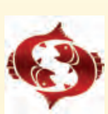

**मीन राशि -** शारीरिक कष्ट जिससे मन हमेशा खिन्न रहेगा। थकानकी अनुभूति, आर्थिक उलझन, व्याधिक्य, विद्या-शैक्षणिक क्षेत्र में प्रतिकूलता। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। रुके कामों में प्रगति, अपनों के सहयोग से उद्योग-धन्धों में सफलता। आर्थिक विकास होगा। यात्रा सुखद रहेगा।

# पूर्व कर्म का फल

*- श्री के.रामनाथन*

महर्षि सत्यानंद एक जंगल में आश्रम बनाकर रहते थे। उन्हें जीवन के प्रति बडी घृणा थी। वे जन्म-मरण के चक्कर से बच निकलना चाहते थे। इसके लिए वे रोज भगवान विष्णु की पूजा करते थे। वे रोज जंगल में से सुगंधित फूलों को लाकर भगवान की पूजा करते थे। उनके पास एक गाय थी। वे उस गाय से मिलते दूध को भगवान की पूजा में रखते थे।

वे भगवान की पूजा करने के बाद भगवान को निवेदित किये उस दूध को पीकर अपनी तपस्या में लीन हो जाते थे। महर्षि सत्यानंद रोज इस प्रकार करते थे। वे पूजा में पूजित दूध के सिवाय कोई खाद्य नहीं लेते थे। उनका विश्वास था कि एक दिन भगवान उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके उसके सामने प्रस्तुत होंगे। उनकी ऐसी तपस्या कई सालों से चल रही थी।

एक दिन देवी लक्ष्मी को उनकी ऐसी प्रार्थना देखकर बडा आश्चर्य हुआ। वे महर्षि की ऐसी कठोर भक्ति से प्रसन्न हुई और उसके सामने प्रस्तुत हुई। अपने सामने देवी को देखकर महर्षि बहुत आनंदित हुए और उन्होंने देवी के चरण पर गिरकर नमस्कार किया। तब देवी ने उनको आशीर्वाद देते हुए कहा, ''तुम्हारी प्रार्थना से मेरा मन प्रसन्न है। इसलिए आपको क्या वर चाहिए?''

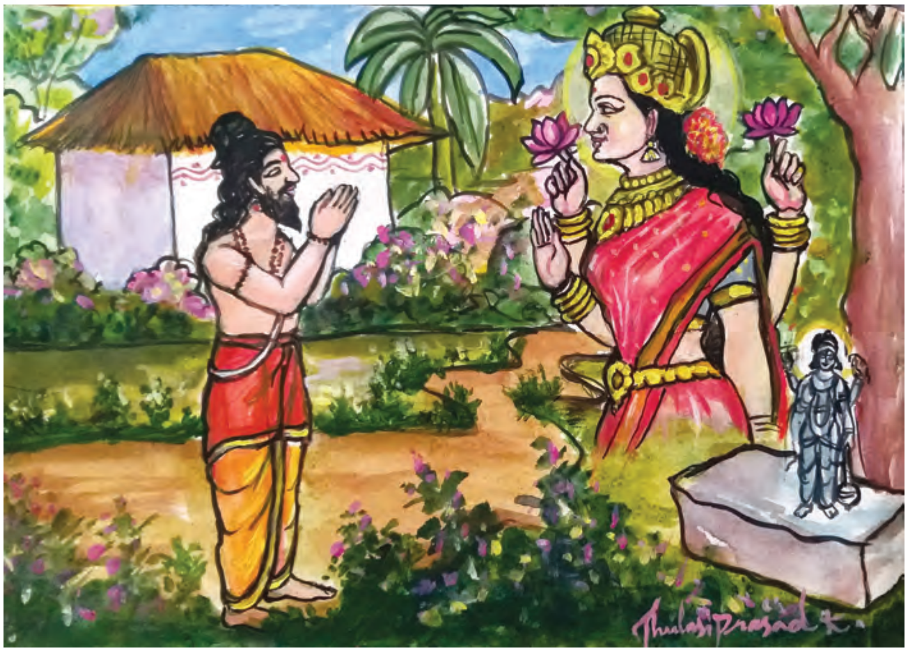

महर्षि ने देवी को प्रार्थना करते हुए कहा, ''देवी मुझे इस संसार सागर से मुक्ति चाहिए। मैं जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति पाना चाहता हूँ। आप मुझे ऐसा वर दीजिए।'' देवी ने उनकी प्रार्थना को सुनकर मुस्कुराया। देवी को मुस्कुराते देखकर महर्षि के मन में संदेह हुआ कि क्या मुझे मुक्ति का वर नहीं मिलेगा? क्या मैं उसका योग्य नहीं हूँ? इसलिए उन्होंने देवी को देखकर पूछा, ''देवी आप मेरी प्रार्थना सुनकर क्यों मुस्कुराती हैं?''

देवी ने उसे उत्तर देते हुए कहा, ''महर्षि! इस संसार में कोई भी अपने पूर्व कर्म के फल को प्राप्त किये बिना नहीं रहेगा। मैं तुम्हारे पूर्व कर्म फल

के बारे में सोचा और इसलिए मुस्कुराया। क्योंकि अपने पूर्व कर्म के फल के अनुसार तुमको एक धनवान बनना चाहिए और उसके बाद ही तुमको मुक्ति की प्राप्ति होगी।''

यह सुनकर महर्षि ने कहा, ''देवी मुझे कोई ऐश्वर्य नहीं चाहिए। मुझे सिर्फ मुक्ति दे दीजिए।'' परंतु देवी यह कहकर लुप्त हो गई कि तुम पूर्व कर्म के फल की प्राप्ति को टाल नहीं सकते। देवी के ऐसे जवाब से महर्षि उदास हो उठे। थोडे समय के बाद उन्होंने निश्चय किया कि देवी के ऐसे निर्णय को किसी न किसी तरह बदलना चाहिए।

एक दिन महर्षि रोज की तरह भगवान विष्णु की पूजा के लिए जंगल में फूलों को तोडने के लिए गये थे। तब उन्होंने देखा कि जंगल में शिकार करने आया राजा एक विशाल पेड के नीचे आराम कर रहा है। उसका रत्न जटित मुकुट निकट जमीन पर रखा गया है और वह रेशम के कपडे से ढका हुआ है। यह देखकर महर्षि के मन में एक उपाय सूझ पडा। उन्होंने सोचा कि इस मुकुट को लात मारने से राजा क्रोधित हो जायेंगे। इस कार्य के लिए वे दंड के रूप में उसे तलवार से मार देंगे। इससे उसको जीवन से मुक्ति मिल जाएगी और देवी का निर्णय भी विफलित हो जाएगा।

महर्षि के ऐसे विचार को देवी लक्ष्मी ने समझ लिया। तुरंत देवी ने एक विषैले राजनाग को उस मुकुट के अंदर छिपा दिया। महर्षि ने निकट आकर मुकुट को जोर से लात मारा और इससे राजा की नींद भी खुल गयी। वे तुरंत उठ खडे हो गए और उन्होंने देखा कि मुकुट से एक विषैला साँप निकल भाग रहा है। महर्षि ने ही मुकुट को लात मारकर उसे भगा दिया है। इस महर्षि ने मुझे बचाने के लिए ऐसा कार्य किया है। इससे राजा ने महर्षि की बडी प्रशंसा की।

वे महर्षि को अपने साथ लेकर महल में आ पहुँचे। उन्होंने अपने दरबार में सब लोगों के सामने जंगल में विषैले साँप से अपने प्राण को बचाये महर्षि के कार्य के बारे में विस्तार से बताया। उसके बाद उन्होंने यह सूचित किया कि मैं महर्षि को अपने राजगुरु के रूप में स्वीकार करता हूँ। वे अब से इस महल में रहकर देश की उन्नति के लिए मुझे सहायता करेंगे। अब महर्षि को राजा कि आज्ञा को स्वीकारना पडा।

अब महर्षि को देवी का कथन याद आया कि 'पूर्व कर्म के फल' से कोई भी बच नहीं सकता।

**सितंबर-2023 महीने का क्विज-14 के समाधान**

**1)** श्री महालक्ष्मी, **2)** भृगु,

**3)** राजा तोंडमान, **4)** वामनावतार,

**5)** पार्वती-परमेश्वर, **6)** जय और विजय

**7)** वराहस्वामी, **8)** यमुना नदी,

**9)** कालीय, **10)** बलराम, **11)** वकुला,

**12)** बृहस्पति, **13)** शुक्राचार्य,

**14)** श्रीकृष्ण, **15)** देवकी.

चित्रकथा

# पद्मव्यूह

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.तुलसीप्रसाद

अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का जन्म सुभद्रा के गर्भ से हुआ था। अभिमन्यु श्रीकृष्ण के सानिध्य में बडा हुआ था। वे अद्वितीय नायक थे। कुरुक्षेत्र में युद्ध तेरहवीं दिन तक पहुँच गया था। सेनाधिपति द्रोणाचार्य ने पद्मव्यूह की आयोजना किया। द्रोण ने राजा से...

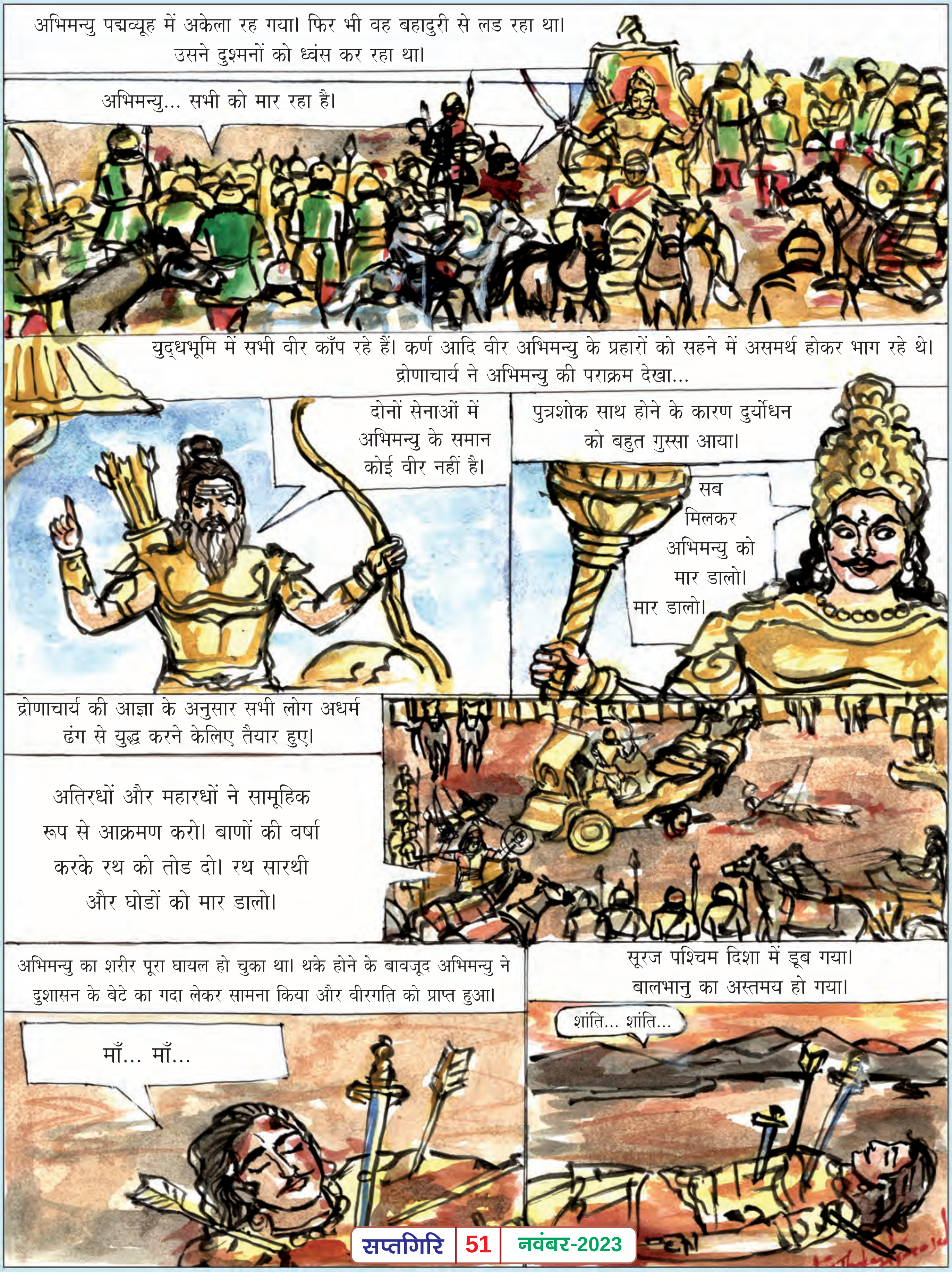
अभिमन्यु पद्मव्यूह में अकेला रह गया। फिर भी वह बहादुरी से लड रहा था। उसने दुश्मनों को ध्वंस कर रहा था।
अभिमन्यु... सभी को मार रहा है।
युद्धभूमि में सभी वीर काँप रहे हैं। कर्ण आदि वीर अभिमन्यु के प्रहारों को सहने में असमर्थ होकर भाग रहे थे। द्रोणाचार्य ने अभिमन्यु की पराक्रम देखा...
दोनों सेनाओं में अभिमन्यु के समान कोई वीर नहीं है।
पुत्रशोक साथ होने के कारण दुर्योधन को बहुत गुस्सा आया।
सब मिलकर अभिमन्यु को मार डालो। मार डालो।
द्रोणाचार्य की आज्ञा के अनुसार सभी लोग अधर्म ढंग से युद्ध करने केलिए तैयार हुए।
अतिरधों और महारधों ने सामूहिक रूप से आक्रमण करो। बाणों की वर्षा करके रथ को तोड दो। रथ सारथी और घोडों को मार डालो।
अभिमन्यु का शरीर पूरा घायल हो चुका था। थके होने के बावजूद अभिमन्यु ने दुशासन के बेटे का गदा लेकर सामना किया और वीरगति को प्राप्त हुआ।
माँ... माँ...
सूरज पश्चिम दिशा में डूब गया। बालभानु का अस्तमय हो गया।
शांति... शांति...

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

## प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

**प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-**
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..........................................
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..................................................
......................................................
मोबाइल नं..........................................

# क्विज-16

1) तिरुचानूर में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)......................................................
2) माता पद्मावती के ब्रह्मोत्सव में श्रेष्ठ वाहन कौन सा है?
ज)......................................................
3) तिरुचानूर पद्मसरोवर में संपन्न होनेवाले पुण्य स्नान को क्या कहते है?
ज)......................................................
4) सत्यभामा का पति का नाम क्या है?
ज)......................................................
5) भगवान विष्णु वामनावतार में तीन पग के जमीन किससे माँगा?
ज)......................................................
6) आश्वयुज अमावास्या के दिन संपन्न होनेवाले पर्व कौन सा है?
ज)......................................................
7) महर्षि सत्यानंद प्रत्येक दिन किस भगवान की आराधना करते थे?
ज)......................................................
8) कार्तिक शुद्ध द्वादशी को क्या कहते है?
ज)......................................................
9) क्षीर सागर मंथन को किन्होंने किया?
ज)......................................................
10) हरि-हर का प्रिय मास क्या है?
ज)......................................................
11) वेंकटाचल के पद तल में विराजित भगवान का नाम क्या है?
ज)......................................................
12) ऋषि-मुनियों ने वेंकटाचल यात्रा के समय किन नदियों में स्नान किया?
ज)......................................................
13) अर्जुन के पुत्र का नाम क्या है?
ज)......................................................
14) कौरवों द्वारा रची किस व्यूह से अभिमन्यु ने वीरगति को प्राप्त किया?
ज)......................................................
15) पशुपतिनाथ मंदिर किस देश में है?
ज)......................................................

बालविकास

## बिंदी को जोड़िए

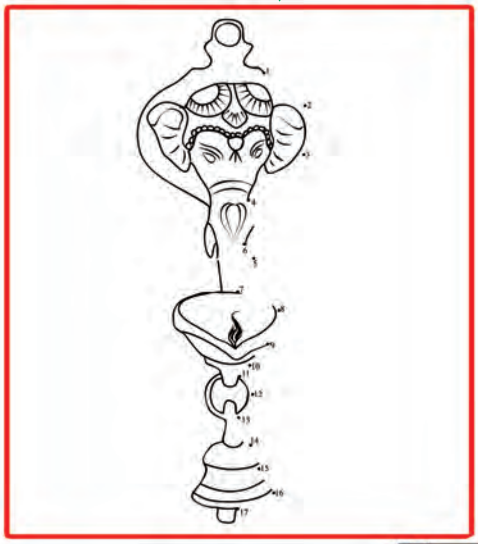

## रंगों को भरिये क्या!

## निम्न लिखित को मिलाएँ!

| | |
|---|---|
| 1) वैकुंठ एकादशी | अ) परमेश्वर |
| 2) महाशिवरात्री | आ) गणेश |
| 3) गणेश चतुर्थी | इ) श्रीमहाविष्णु |
| 4) दशहरा | ई) राखी |
| 5) श्रावण पूर्णिमा | उ) दुर्गा माता |

1) इ 2) अ 3) आ 4) उ 5) ई

## श्री लक्ष्मी स्तुति

गजलक्ष्मी नमस्तेऽस्तु

सर्वदेवस्वरूपिणी।

अश्वांश्च गोकुलं देही

सर्वकामांश्च देही मे।।

## चित्र में अंतर खोजे!

उत्तर

१) तोरण

२) केला गुच्छ

३) पुष्प

४) अमरूद

५) केला

६) रंगोली

७) दिवार के ऊपर डिजाइन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

# सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

## चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ......................................
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ......................................
......................................
पिनकोड ..............................
मोबाइल नं ............................

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

## धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
**दूरभाष :**
2264359, 2264543.
**संपादक :** 2264360

**कॉल सेंटर नंबर :**
2233333, 2277777.

**मंत्र**
**ॐ नमो वेंकटेशाय**

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

19-11-2023 को
तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का पुष्पयाग महोत्सव

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-10-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.